R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में
विज्ञापन बुक कराने हेतु
सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

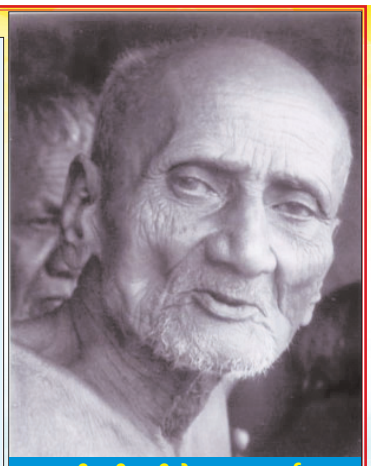

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 12 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 20 जनवरी 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन

तमिलनाडु के अरितापट्टी क्षेत्र में टंग्सटन खनन के आबंटन का विरोध

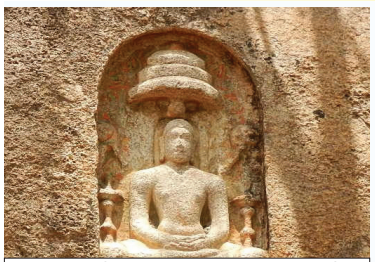

अरितापट्टी और आसपास के स्थानों में प्राचीन जैन स्मारक, चट्टान पर काटे गये शिलालेख, मन्दिर

अधिवेशन की झलकियां

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन (धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी, महिला, युवा महासभा) रविवार, दिनांक 05 जनवरी 2025 को प्रातः 9:45 बजे आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी तपोस्थली, पुन्नरमलाई (तमिलनाडु) पर महासभा के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री रमेश जैन तिजारिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

राष्ट्रीय अधिवेशन का प्रांरभ पारम्परिक मंगलाचरण द्वारा हुआ जिसे तमिलनाडु महिला महासभा के सदस्यों ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् महासभा के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री 108 शांतिसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण और दीप प्रज्ज्वलन किया गया। वरिष्ठ राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष (तीर्थ) श्री एम. के. जैन जी ने पुन्नरमलाई पधारे महासभा के सभी सदस्यों व पदाधिकरियों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन किया। महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या ने गत प्रबंधकारिणी की बैठक का कार्य विवरण प्रस्तुत किया जिसे बैठक ने सर्वसम्मति से पारित किया। उन्होंने तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी, महिला एवं युवा महासभा की गतिविधियों से बैठक को अवगत किया।

श्री एम. के. जैन, डॉ. निर्मल कुमार जैन, श्री राजेश बी. शाह, श्री सुन्दरलाल डागरिया, श्री अशोक चूड़ीवाल, बरपेटा, श्री अशोक जैन जैतावत, उदयपुर, श्री सुनील काला आदि ने भी बैठक को सम्बोधित किया।

श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन (सदस्य अल्पसंख्यक आयोग-तमिलनाडु) ने तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बैठक को बताया कि तमिलनाडु में जैन धर्म ईसा पूर्व (B.C) में अत्यधिक फैला हुआ था। जैन धर्मावलम्बियों की संख्या बहुत थी। तमिलनाडु में जैन स्मारक और धरोहर प्रचुर मात्रा में है। लगभग 70 दिगम्बर जैन स्मारक तमिलनाडु में हैं, जिन्हें सुरक्षित स्मारक धोषित करने हेतु हम लोग राज्य सरकार से अनुरोध कर रहे हैं।

श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन जी ने बैठक को बताया कि तमिलनाडु के अरितापट्टी की पहाड़ियां दिगम्बर जैन स्मारकों और तमिल

शेष पृष्ठ ...... 3 पर

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
वर्ष 2025 मे 7 देशो की सैर
20 April, 18 May, 1 June, 15 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT
WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

875 साल प्राचीन मूलनायक
श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

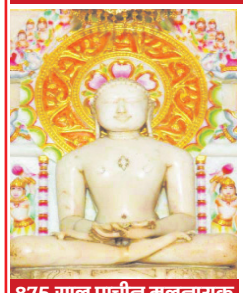

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 7:00 PM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991
हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
अन्य जानकारी हेतु स्थानीय संपर्क सूत्र
मनीष गंगवाल-सह अध्यक्ष
मोबाइल नंबर 95880 20330
इस अतिशय क्षेत्र में किसी भी तरह की बोली, चंदा, डाक या राशि का आग्रह वर्जित है।

JK MASALE SINCE 1957

– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...
Buy online on jkcart.com

CAMBRIDGE
International Education
Cambridge International School

PAVNA
INTERNATIONAL
SCHOOL

Distinguished
School

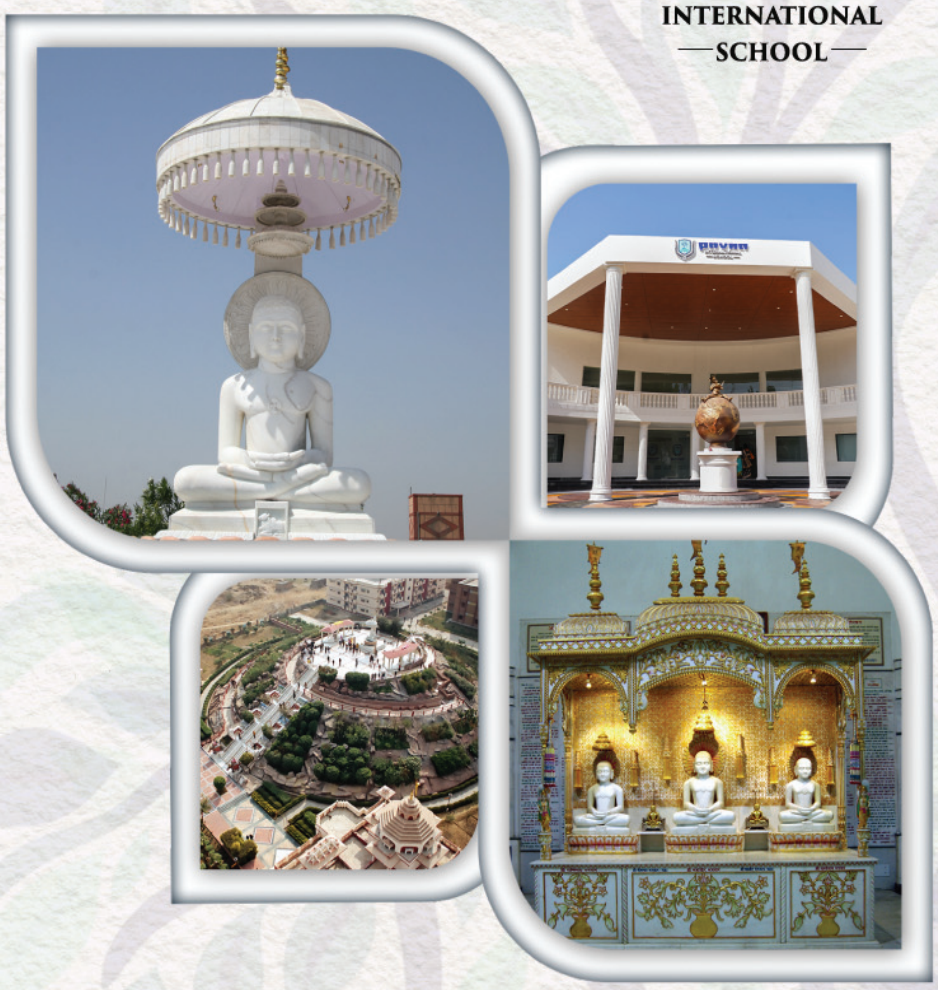

25%

SCHOLARSHIP
AVAILABLE FOR
BOARDING
STUDENTS
FROM
JAIN FAMILIES

FORMATIVE EDUCATION SEASONED WITH VALUES

DAILY DEV
DARSHAN

REGULAR
SPIRITUAL TRAININGS

WE FOLLOW
JAIN DISCIPLINE

SERVING
JAIN FOOD

WE ARE OFFERING

- CAMBRIDGE CURRICULUM
- APPLE ENABLED TECHNOLOGY
- 10+ EXTRA CURRICULAR ACTIVITIES
- 9+ OLYMPIC GRADE SPORTS FACILITY
- EXPERIENTIAL LEARNING
- MULTI-NATIONAL FACULTY
- WORLD CLASS LEARNING AMBIENCE

School Address: Aligarh-Agra Highway, Sasni Hathras - 204216, Uttar Pradesh (India)
Phone No.: +91 82669 54001 | +91 82669 54007 **Website:** www.PAVNAINTLSCHOOL.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.

OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

अधिवेशन की झलकियां

महासभा का अधिवेशन

शेष पृष्ठ 1 का

जैन धर्मावलम्बियों के इतिहास को अपने में समेटे हुये है। इस क्षेत्र में 72 जलाशय और 200 से अधिक प्राकृतिक झरने और तीन बांध थे, यह जैन विविधता का विरासत स्थल है। उन्होंने बताया कि ऐसी जगह पर टंग्सटन खनन की अनुमति देकर इस प्राकृतिक क्षेत्र को रेगिस्तान बनाना है। हिन्दुस्तान जिंक जो वेदांता ग्रुप की सहायक है उसे मदुराई जिले के अरितापट्टी तथा उसके आस-पास 8 ब्लॉक के टंग्सटन खनन की अनुमति केन्द्र सरकार द्वारा नवम्बर 2024 में प्रदान की गई। मदुराई जिले के मेलुर तालुक के निवासियों ने इसका घोर विरोध किया। पुरातत्ववेत्ताओं के एक समूह ने राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि आरितापट्टी में प्रस्तावित टंग्सटन खनन योजना को बन्द किया जाय तथा केन्द्र सरकार के इस निर्णय की भर्त्सना की। अरितापट्टी जैन स्मारक स्थल है। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री प्रकाशचन्द्र जैन ने भारत सरकार के नवम्बर 2024 को मदुराई जिले के अरितापट्टी तथा आसपास के इलाके में टंग्सटन के खनन के आबंटन का विरोध करते हुये कहा कि प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस इलाके के पर्यावरण पर इसके खनन का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अरितापट्टी, मनकुलम तथा आसपास के क्षेत्र ग्रेनाइट के टीले और भूजलाशय से घिरे हुये हैं। इस प्रकार यह क्षेत्र जैव विविधता (Hot spot) हाट स्पाट का निर्माण करते हैं। अरितापट्टी और आसपास के स्थानों में प्राचीन जैन स्मारक, चट्टान पर काटे गये शिलालेख और मन्दिर हैं जो तमिलनाडु की विरासत के अमूल्य खजाने हैं। मनकलम में 2300 वर्ष पुराने तमिल जैन शिलालेख हैं। उन पर जैन तीर्थंकरों के उपदेश उकेरे हुये हैं। अतः जैन समाज अरितापट्टी स्थित प्राचीन विरासत के खजाने का संरक्षण और जैव विविधता के संरक्षण हेतु केन्द्र सरकार के नवम्बर 2024 के आदेश को रद्द करने का विनम्र अनुरोध करती हैं। राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री अजीत जैन, चांदुवाड़ (असम), श्री विकास जैन, दिल्ली, श्री अशोक जैन छाबड़ा, गुवाहाटी, श्री सुमत लल्ला जैन, श्री अनिल कासलीवाल, श्री उमेश चांदुवाड़, श्री शेखर पाटनी, श्रीमती संगीता सेठी, श्रीमती संगीता चांदुवाड़, श्रीमती पुष्पा बाकलीवाल आदि उपस्थित थे।

संबोधन
श्री प्रकाशचन्द बड़जात्या
राष्ट्रीय महामंत्री-महासभा

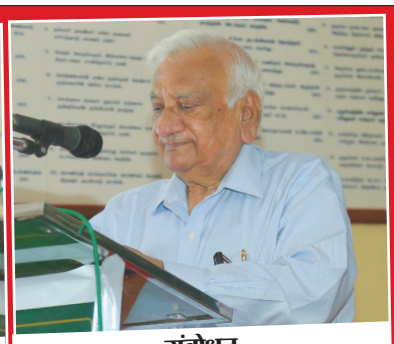

संबोधन
श्री एम. के. जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष - महासभा (तीर्थ)

अरितापट्टी और आसपास के स्थानों में प्राचीन जैन स्मारक, चट्टान पर काटे गये शिलालेख, मन्दिर

– प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या, राष्ट्रीय महामंत्री, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन् वंदन

सन्मतिसुनीलम - पार्ट-1

आपका शांत और स्थिर दिमाग आपके जीवन की हर जंग का ब्रह्मास्त्र है।

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

- श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
- राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
- मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
- महावीर महिला मण्डल, किशनगढ़
- श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़
- हेमन्द्र कुमार एडवोकेट, बांसवाड़ा
- महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता, जोधपुर
- विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
- कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
- श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड, किशनगढ़
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- श्रीमती ममता सोगानी, जयपुर

जयपुर निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रेमचंद छाबडा देश की विभिन्न धार्मिक, शिक्षण, तकनीकी संस्थाओं में तन, मन, धन से दे रहे हैं अपना योगदान

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर शहर के प्रसिद्ध समाजसेवी देव, शास्त्र, गुरु के परम भक्त श्री प्रेमचंद छाबड़ा समग्र समाज की विभिन्न संस्थाओं में अपना अमूल्य योगदान देकर धर्म की भव्य प्रभावना बढ़ा रहे हैं। श्री पी. सी. छाबड़ा वर्तमान में विभिन्न संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। आप राष्ट्रीय महासचिव जैन इन्जिनियरिंग सोसायटी इन्टरनेशनल फाउण्डेशन मुख्यालय इन्दौर, परम संरक्षक दि. जैन अतिशय क्षेत्र सांखना, दि. जैन अतिशय क्षेत्र निमोला, धर्म संरक्षण समिति राजस्थान, मुख्य संरक्षक एवं कार्यकारिणी सदस्य अणुव्रत समिति, प्रबंध कार्यकारणी समिति सदस्य (बाड़ा) पदमपुरा, ट्रस्टी श्रमण ज्ञान भारती सिद्धक्षेत्र मथुरा चोरासी, पेटर्न सदस्य जीतो (जैन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन), बीजेएस (भारतीय जैन संगठना), राज्य कार्यकारिणी सदस्य इन्स्टीट्यूट (institute) आफ इन्जिनियरिंग (इंडिया) राजस्थान स्टेट जयपुर चेप्टर, कार्यकारिणी सदस्य राजस्थान पीडब्ल्यूडी वेलफेयर सोसायटी, कार्यकारिणी सदस्य महावीर इन्टरनेशनल एसोसिएशन, कन्सलटेंट (एन एच आई), सलाहकार तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद व अन्य कई मन्दिरों व शिक्षण क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, सदस्य लायन मेट्रो जयपुर, शिरोमणि संरक्षक दि. जैन महासमिति एवं उपाध्यक्ष, अध्यक्ष दि. जैन सोशल ग्रुप पिंक सिटी एवं उपाध्यक्ष राजस्थान अंचल, कन्विनियर श्री महावीर दिग. जैन शिक्षा परिषद जयपुर, सदस्य तीर्थक्षेत्र कमेटी, राजस्थान जैन सभा सहित अन्य विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों/ संस्थाओं में रहते हुए समाज की, देश की सेवा करते आ रहे हैं। आपका बहुमूल्य योगदान कोरोना की गम्भीर बीमारी में भी रहा तथा आपकी सेवाओं को देखते हुए सम्पूर्ण भारतीय स्तर, राजकीय स्तर तथा सामाजिक स्तर पर आपको अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका है। तकनीकी स्तर पर जैन समाज के सर्वश्रेष्ठ टेक्निकल स्पृर्द्धा के चयन में आपको 51000/- रुपए का नगद पुरस्कार प्रमाण पत्र तथा विभिन्न अन्य तकनीकी संस्थाओं ने अपने स्तर पर 5 बार लाईफटाईम अचिवमेन्ट अवार्ड से नवाजा गया है। आप दि. जैन महासमिति के भी सदस्य हैं।

मुनिश्री महिमा सागर जी संघ ने आचार्यश्री के दर्शन, चरण वंदना कर आशीर्वाद लिया

राजेश पंचोलिया, इंदौर

आचार्य पायसागर जी, श्री देशभूषण जी, श्री सुबल सागर जी, आचार्य वरदत्त सागर की शिष्य परंपरा में मुनिश्री महिमा सागर जी ने 6 साधुओं के सहित विगत दिनों पारसोला पहुंचकर आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के दर्शन, चरण वंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आप अभी पारसोला में ही विराजित हैं। एक सुखद संयोग है कि मुनि श्री महिमा सागर जी की वर्ष 1993 में श्रवणबेलगोला में मुनि दीक्षा हुई तब आपके दीक्षा संस्कार आचार्यश्री वरदत्त सागर जी ने किया, वहीं आपका नामकरण आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने किया। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी से दीक्षित मुनि श्री परम सागर जी भी मुनि संघ में संघस्थ हैं। आचार्य श्री के दर्शन के पूर्व आचार्य संघ के मुनियों, माताजी एवं समाज के लोगों ने नगर में मुनि श्री महिमा सागर जी संघ की अगवानी कर उन्हें नगर प्रवेश कराया स्थान-स्थान पर मुनिश्री के चरण प्रक्षालन कर आरती उतारी गई।

जयपुर शहर में मकर संक्रांति पर जैन धर्मावलंबियों ने मनाया जिनबिम्ब दर्शन दिवस

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

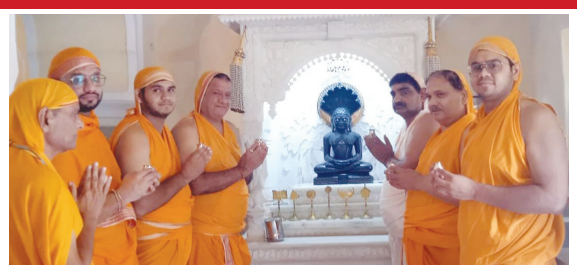

जयपुर, 14 जनवरी। मकर संक्रांति को जैन धर्मावलंबियों ने जिनबिम्ब दर्शन दिवस मनाया। बडी संख्या में मंदिरों में जाकर जिनबिम्बों के दर्शन, पूजा अर्चना की गई। राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि मकर संक्रांति जैन धर्म में जिन बिम्ब दर्शन के रूप में माना जाता है क्योंकि इस दिन भरत चक्रवर्ती ने सूर्य बिम्ब में अक्रत्रिम चैत्यालय के दर्शन किए थे। इसी खुशी में राजा भरत ने अपने कोष के सारे भंडारे दान देने के लिए खोल दिए थे, आज के दिन जैन धर्मावलंबी तीर्थंकर भगवान के दर्शन जरूर से जरूर करते हैं। इस दिन चारों प्रकार के दान में से या करुणा दान में से कुछ ना कुछ दान अवश्य करते हैं।

आर्यिका स्वस्ति भूषण माताजी

शादी की 55 वीं वैवाहिक वर्षगांठ
16.01.2025 पर हार्दिक शुभकामनाएं

आप जियो हजारों साल

साल के दिन हों पचास हजार

इन्जी पी. सी. छाबड़ा एवं तिलकमती जैन
(वैवाहिक वर्ष 16 जनवरी 1971)

-: शुभेच्छु :-

डॉ. विपिन-अहिंसा जैन, विनीत-डॉ. संजोली जैन (पुत्र-बहु)
डॉ. वन्दना-मोनिल (पुत्री-दामाद), लगन, आदि, निहार (पौत्र), परी एवं यूवी (दोहती-दोहते) सहित समस्त छाबड़ा परिवार, जयपुर (राज.)

निवासः बी-53, जनता कॉलोनी, जयपुर-302004 मो. 9414052412

संकलनः राजाबाबू गोधा, जैन गजट संवाददाता फागी मो. 09460554501

चतुर्थ पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि

जन्म तिथि
25 दिसम्बर, 1932

स्वर्गवास
24 जनवरी, 2021

स्व. श्री शांतिलाल जी बड़जात्या, अजमेर

परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज को अपना गुरू मानते हुए उन्होंने गुरू के गुरूत्व से आच्छादित अपने आप में व्यक्तित्व को बखूबी तराशा था। सचमुच वे विलक्षण प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। आज के भागमभाग के युग में किसी व्यक्ति विशेष में, बहुआयामी व्यक्तित्व का सृजन करने में सहायक गुण तत्वों का विद्यमान होना कल्पनातीत है लेकिन जो बाबूजी से परिचित थे, भली-भांति जानते थे कि ऐसी शख्सियत गुणों के अंतराल में इस धरा पर कहीं दिखाई देती होगी। एक प्रकार से उन्होंने जैन जगत में उत्तम श्रावक धर्म की अलख जगाई थी। दरअसल वे अपने आप में 'शक्तिपुंज' ही तो थे। इस भारत-वसन्धुरा में चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य शान्ति सागर जी महाराज के प्रति शान्तिलाल जी बड़जात्या की जो भक्ति थी वह गागर में सागर भरने वाली थी। - शेखरचन्द पाटनी

शोकाकुल बड़जात्या परिवार

कैलाश चंद जी-कनकमाला बड़जात्या (लघु भ्राता), जितेंद्र-रानी बड़जात्या (चचेरे भ्राता), श्रीमती रत्नमाला-प्रेमचंद जी, श्रीमती मीना महावीर जी रांवका (बहन-बहनोई), पवन कुमार-सरोज देवी, अनिल कुमार-संतोष, अजीत कुमार-लक्ष्मी, संदीप कुमार-संगीता (पुत्र-पुत्रवधु), पुष्पा-प्रकाश चंद जी कटारिया, अनीता-सुदर्शन जी सोनी, प्रियदर्शनी-संजीव कासलीवाल, रेनू-सुनील मोदी, नीलू-मुकेश बज, रूपाली-नीरज (पुत्री-दामाद), परेश, निखिल, दीपिका, अभिषेक, खुशबू, सम्भव, उत्सव, हर्षित (पौत्र-पौत्री), मुनमुन-अनंत जी, निति -अर्चित जी (पौत्री-दामाद)

फर्मः- अनिल कुमार, अजीत कुमार शेरवानी वाले, कोलकाता, सूरत, अजमेर और अन्य ब्रांचेज

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज की जन्म स्थली पीपरा में पंचकल्याणक समारोह 23 से 28 जनवरी तक

संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक, कवि हृदय बुंदेली संत, मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज की जन्म स्थली ग्राम पीपरा के इतिहास में प्रथम बार श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महा महोत्सव का आयोजन परम पूज्य मुनिश्री 108 सुव्रतसागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में 23 जनवरी से 28 जनवरी तक आयोजित किया जा रहा है। जानकारी देते हुए मंदिर कमेटी अध्यक्ष पवन जैन एवं महामंत्री कमलेश नायक ने बताया कि कायक्रम के लिए तैयारी जोरों से रही है। मुनिश्री का दमोह चातुर्मास के उपरांत विहार भी पीपरा के लिए चल रहा है।

प्रातः श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर, अंकुर कॉलोनी में मुनिश्री की भव्य अगवानी की गयी। अंकुर कॉलोनी में विराजमान आर्यिकारत्न 105 श्री गुणमती माताजी ससंघ ने मकरोनिया चौराहा पहुंचकर मुनिश्री की मंगल अगवानी की। मुनिश्री के मंगल सानिध्य में 15 जनवरी को एक दिवसीय सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन भी किया गया है। अगवानी में प्रो. अमरचंद जैन, सुकमाल जैन, प्रसन्न जैन बंडा, जिनेश बहरोल, अरिहंत जैन, कमलेश चौधरी, राकेश छुल्ला, अमित जैन, प्रदीप गन्नौर, अभय सुपर, डॉ. राकेश जैन, शिवम, मृदुल सहित बड़ी संख्या में पुरुष एवं महिलाएं मौजूद थीं। पंचकल्याणक कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन चितौरा ने बताया कि पात्रों का चयन भी हो चुका है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री राजेंद्र कुमार श्रीमती अंगूरी बाई जैन को प्राप्त हुआ है। पंचकल्याणक की सारी क्रिया विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी संजय भैया मुरैना के निर्देशन में की जावेगी।

विद्यासागरजी के पेनौरमा का शिलान्यास स्थगित

जैन संत विद्यासागर जी महाराज के पेनौरमा का शिलान्यास समारोह 19 जनवरी को अजमेर के निकट नारेली क्षेत्र में होना था, लेकिन अपरिहार्य कारणों से यह समारोह निरस्त हो गया है। राजस्थान धरोहर संरक्षण प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से विमर्श के बाद शिलान्यास की नई तिथि घोषित की जाएगी। मालूम हो कि सरकार ने पेनौरमा के नारेली में 21 हजार मीटर के भूमि का निशुल्क आवंटन किया है।

With best comlipments from
Ashok Anuradha Pahariya
Assam knitwear, Guwahati (Assam)
(Manufacturer of Sweater, T Shirts, Track Suit etc and deals in all kinds of school uniform)]
Mobile No. 8761015224
Sohani Imphal (Manipur)
(A store of salwar suit, night wears, saris, bed sheets, blankets etc)
Mob. 8732804313

आचार्य श्रेय सागरजी महाराज ससंघ ने किये सागवाडा के जिनालयों के दर्शन

समाधिस्थ आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी ऋषिराज के पट्ट शिष्य पाडवा गांव में जन्मे आचार्य श्रेय सागर महाराज ससंघ ने सागवाड़ा नगर के सभी जिनालयों के दर्शन किये। समाज के प्रतिष्ठाचार्य विनोद पगारिया विरल ने बताया कि आचार्य श्रेय सागरजी महाराज संघस्थ मुनि सुदर्शन सागरजी, गणिनी आर्यिका श्रेयमती माताजी, आर्यिका श्रेष्ठमति माताजी, ब्रह्मचारिणी हरिप्रिया दीदी व नेहल दीदी के साथ श्री विमलनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर पुनर्वास कॉलोनी से पद विहार कर सागवाडा पहुंचे जहा ससंघ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन सेठे का मन्दिर, गांधियों का मन्दिर, सोनियों का मन्दिर' जूना मन्दिर, चन्द्रप्रभु मन्दिर, पगल्याजी जल मन्दिर एवं योगिन्द गिरि के दर्शन किये एवं मन्दिर के इतिहास के बारे मे जानकारी ली।

इस अवसर पर प्रतिष्ठाचार्य पगारिया, दिनेश जांगा, सेठ महेश नोगमिया, ट्रस्टी संतोष खोडनिया, दिनेश मेहता, हेमन्त फलेजिया, सुरेश विरदावत शरद बोबडा सहित अनेक श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर आचार्य का पाद प्रक्षालन किया। ज्ञातव्य है कि आचार्य श्रेय सागर जी महाराज अपनी जन्म भूमि पाडवा में आयोजित होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मे भाग लेने हेतु पाडवा विहार कर रहे हैं जहां पाड़वा में आचार्य सुनील सागरजी महाराज विशाल संघ के साथ मिलन होगा।

SUPERCON
Durable, Hygienic, Strong Quality Products
Take a Step towards better hygine..
Water Tanks

• Easy Installation • Easy To Clean • Safe for Drinking Water

Septic Tanks
• No Maintenance Required
• No Construction Required
• Keeps Environment Clean

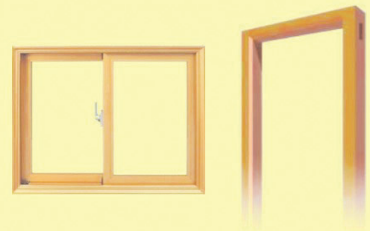

Solid Plastic Chakhats
Available in Sizes & Design As Per Requriments
• Water, Termite and Warping Proof
• Maintenance Free • Life 50+ Years

Jain Agencies
17 A, Neel Cottage Maldhaiya, Varanasi 221002
email: jainagencies3@gmail.com +91 88874 58519, 9415225395

राज्य स्तरीय शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता में सिया काला ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया

सीमांत काला

सरस्वती संगीत महाविद्यालय द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में लगभग पचास प्रतियोगियों में सिया काला (सुपुत्री एडवोकेट सीमांत वीणा काला), भोपाल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि विधायक श्री भगवानदास सबनानी जी थे। स्मरण रहे बिटिया सिया उम्र में 9 वर्ष की होकर सागर पब्लिक स्कूल की कक्षा 4थी की छात्रा है। सिया की इस अद्वितीय उपलब्धि से काला परिवार में अत्यधिक हर्ष व्याप्त है।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्षण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

तपस्या के माध्यम से ही ज्ञान की शान होती है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)
1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
5. प्रेमचन्द सुभाषचन्द लक्ष्मी बगड़ा (नेमीसागर कालोनी, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

सम्पादकीय

मानसिक प्रदूषण

हम जितनी भौतिक उन्नति कर रहे हैं उतने ही हर तरह से दूषित भी होते जा रहे हैं। वैज्ञानिक उन्नति और विकास के मामले में हम तकनीकी उपलब्धियों से मालामाल हो रहे हैं पर शुद्धता, स्वस्थता और स्वच्छता के मामले में हमारा दिवाला निकला जा रहा है। यह कैसी उन्नति है कि चांद की ऊंचाई को छूने वाला मानव मानवता और सौहार्द से विहीन और नैतिक रूप से पतित होकर भ्रष्टाचार के भयानक भंवर में फंसता हुआ रसातल की ओर बढ़ता चला जा रहा है। आज ऐशो-आराम के भौतिक साधनों से मन को बहलाने के लिए नाना प्रकार के उपाय किये जा रहे हैं लेकिन आत्मा कितनी दरिद्र होती जा रही है इसकी तरफ जरा भी ध्यान नहीं दिया जाता।

जहां तक वातावरण के दूषित होने का सवाल है तो मामला सिर्फ वायुमण्डल के ही दूषित होने का नहीं है। जरा गहरे में सोच विचार करें तो हर क्षेत्र में आपको प्रदूषण का प्रभाव मिलेगा। अगर किसी के कपड़े साफ हैं तो तन साफ नहीं है, तन साफ है तो मन साफ नहीं है और मान लीजिए कि अभी मन साफ भी है तो नीयत साफ नहीं है कि कल को मन किधर बहक जाए, क्योंकि मन को मजबूत रखने, नियन्त्रण में रखने और शुद्ध विचारों वाला रखने की कोई शिक्षा-दीक्षा नहीं दी जाती। बच्चों को बचपन से ही नैतिकता, सदाचरण और स्वास्थ्य रक्षा सम्बनी शिक्षा दी जाए, उनको अच्छे संस्कार दिये जाएं और ऊंच नीच समझाई जाए तो वे कुछ जानें और समझें भी। अभी तो फिल्मों, कामिक्स, उपन्यासों और जोक्स की किताबों या संगी साथियों से ही दुनियादारी की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। थोड़ी बहुत कसर बाकी थी तो घर-घर टी. वी. पहुंच गया है जिस पर विज्ञापनों द्वारा ऐसी चीजों की जानकारी प्रसारित की जा रही हैं जो जीवन में विलासिता, फिजूलखर्ची और रंगरेलियां मनाने की प्रवृत्ति को न सिर्फ जन्म दे रही हैं बल्कि बढ़ावा भी दे रही हैं। एक तरफ दुनिया के प्रबुद्ध लोग और शरीर शास्त्री शाकाहार को अपनाने और मांसाहार को त्यागने की सलाह दे रहे हैं दूसरी तरफटी. वी. अण्डों की तारीफकर अण्डों को खाने का विज्ञापन प्रसारित कर रहा है। जो नहीं खाते उनके मन में भी अण्डा खाने की लालसा पैदा कर रहा है। अहिंसा के मानने वाले शाकाहारी परिवारों को ऐसे विज्ञापन देखकर कितना मानसिक कष्ट होता होगा यह अनुभवी ही जान सकते हैं। वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि अण्डा खाने वाला निरोग और स्वस्थ रह ही नहीं सकता और टी. वी. कह रहा है अण्डा खाओ। इंग्लैंड के डॉ. राबर्ट ग्रास, डॉ. इविंग, डॉ. केथेराइन, डॉ. ई. वी. मैकफ्लेगो, डॉ. ओकडा, भारतीय शाकाहारी परिषद के निदेशक डॉ. एस. के. जैन व अमेरिकी हेल्थ बुलेटिन के डाक्टरों ने अण्डे के विषय में यह निष्कर्ष निकाला है कि अण्डे में विद्यमान कोलेस्ट्रोल नामक तत्व से पथरी व अल्सर होना, गुर्दे के रोग व उच्च रक्तचाप होना आदि रोग होते हैं। इसकी सफेदी में पाया जाने वाला एबिडन नामक तत्व एक्जिमा व लकवा पैदा करता है। अल्पायु (बाल्यकाल) में अण्डा खाना सबसे भयानक होता है इससे रोग प्रतिरोधक शक्ति नष्ट होती है और बच्चे विकलांग हो जाते हैं। इस सफेदी का प्रयोग जिन जानवरों पर किया गया उन्हें लकवा हो गया। एबिडन के साथ चूंकि पित्त मिल नहीं पाता लिहाजा अण्डे का 50 प्रतिशत भाग तो बिना पचे ही मल के साथ निकल जाता है और खाने वाला समझता है कि मैं पहलवान बन रहा हूं। अण्डे में थोड़ा बहुत कैल्शियम तो होता है पर कार्बोहाइड्रेट का इसमें अभाव होता है। इसकी कमी और अन्य हानिकारक तत्वों की मौजूदगी के कारण बड़ी आंत सड़ने लगती है। डॉक्टरों ने अपने अनुसंधान में यह भी पाया है कि 10 प्रतिशत अण्डों में डी. डी. टी. नामक विष भी अल्प मात्रा में आ जाता है। अण्डों की उत्पादन वृद्धि के लिए मुर्गियों को जो रासायनिक आहार दिया जाता है उनके परिणाम स्वरूप अण्डे सेवन करने वाले को त्वचा के विभिन्न रोग होने का खतरा रहता है। अब इतनी बातें जो जानते समझते नहीं वे तो विज्ञापन देखकर अण्डा खाना शुरू कर ही देंगे न ?

अब ऐसे वातावरण में सिर्फ वायुमण्डल के प्रदूषण की बात क्या करना जबकि सब तरफ मानसिक और वैचारिक रूप से प्रदूषण फैलाया जा रहा हो, जहां खाद्य पदार्थ दूषित हों, आहार-विहार और आचार विचार दूषित हों और जिधर देखें उधर प्रदूषण दिखाई देता हो। हम सिर्फ इतना चाहते हैं कि आप सबका ध्यान इस तरफ आकर्षित कर कुछ सोचने विचारने और उचित उपाय करने का आवाहन कर सकें। जरा सोचिए, आखिर इस सबका परिणाम क्या होगा ? न सोचें तो मर्जी आपकी, बाकी फिर यह न कह सकेंगे कि आपको पहले से खबर न थी।

-कपूरचन्द जैन पाटनी,
प्रधान सम्पादक

जैन धर्म : एक वैज्ञानिक, तार्किक और सहिष्णु जीवन दर्शन

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

जैन धर्म न केवल एक धर्म है, बल्कि यह जीवन जीने का एक आदर्श मार्ग है। इसकी शिक्षाएं आत्मनिर्भरता, अहिंसा, सह-अस्तित्व और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। इस लेख में हम जैन धर्म की गहराई, उसके सिद्धांतों और उसके वैज्ञानिक एवं तार्किक पहलुओं को समझने का प्रयास करेंगे।

1. नास्तिक धर्म की अवधारणा: सृष्टि और ईश्वर पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण - जैन धर्म को ''नास्तिक धर्म'' कहा जाता है क्योंकि यह सृष्टि के निर्माण और संचालन के लिए किसी सृष्टिकर्ता ईश्वर की आवश्यकता को नकारता है। इसके स्थान पर, यह कर्म और आत्मा के सिद्धांतों को केंद्र में रखता है।

उदाहरण: जैन धर्म का मानना है कि सृष्टि अनादि और अनंत है, जिसे किसी ने बनाया नहीं है। यह स्वचालित रूप से अपने नियमों से चलती है।

कोट: आचार्य उमास्वामी ने ''तत्वार्थसूत्र'' में लिखा है: ''जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, बंध, निर्जरा और मोक्ष/यही सृष्टि के घटक हैं।''

यह दृष्टिकोण सहिष्णुता को बढ़ावा देता है और ''मेरा भगवान श्रेष्ठ'' जैसी धारणाओं से बचने की प्रेरणा देता है।

2. साक्षरता और शिक्षा: जैन समुदाय का प्रमुख गुण - भारत में जैन समुदाय को सबसे साक्षर और शिक्षित समुदाय माना जाता है। इसकी साक्षरता दर लगभग 95 प्रतिशत है। शिक्षा को जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का पहला कदम माना गया है।

वैज्ञानिक आधार: ज्ञान को तीन भागों में बांटा गया है - श्रुत ज्ञान (शिक्षा और पठन-पाठन), मति ज्ञान (तर्क और बुद्धि), और कैवल्य ज्ञान (सर्वज्ञता)।

उदाहरण: जैन परिवारों में शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप यह समुदाय आर्थिक और सामाजिक रूप से समृद्ध है।

3. आत्मा की महानता: हर आत्मा में असीम क्षमता - जैन धर्म के अनुसार, हर आत्मा पवित्र है और उसमें असीम ज्ञान, दर्शन और शक्ति है। यह आत्मा का शुद्धिकरण करके ''निर्वाण'' प्राप्त करने की शिक्षा देता है।

कोट: भगवान महावीर ने कहा: ''न अण्णेसु तवो सम्मो, आत्मणे तवो तवो।''
(तप दूसरों के लिए नहीं, आत्मा के लिए है।)

उदाहरण: तप और ध्यान के माध्यम से आत्मा की महानता को पहचाना जा सकता है।

4. अहिंसा और करुणा: ''अहिंसा परमो धर्मः'' का सिद्धांत - अहिंसा जैन धर्म का सबसे प्रमुख सिद्धांत है। जैन धर्म सिखाता है कि हर जीव में आत्मा है और उसे कष्ट देना सबसे बड़ा पाप है।

कोट: आचार्य हेमचंद्र ने कहा - ''जीव दया ही धर्म है।''

उदाहरण – जैन धर्म के अनुयायी न केवल शाकाहारी हैं, बल्कि वे रात्रि भोजन और जड़ वाली सब्जियों का भी त्याग करते हैं।

5. 'जियो और जीने दो': सह-अस्तित्व का प्रतीक - जैन धर्म का यह सिद्धांत सह-अस्तित्व और शांति का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि दूसरों के अधिकारों और अस्तित्व का आदर करना चाहिए। वैज्ञानिक पहलू - यह पर्यावरण संरक्षण और जीव जंतु के अधिकारों की रक्षा की प्रेरणा देता है।

उदाहरण: यह दर्शन सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक है।

6. वैज्ञानिक दृष्टिकोण: 2600 वर्ष पुरानी जीवन की अवधारणा - जैन धर्म ने 2600 वर्ष पहले यह बताया कि सूक्ष्म जीव (माइक्रोऑर्गेनिज्म) होते हैं और पौधों में भी जीवन होता है।

उदाहरण : जैन ग्रंथों में बताया गया है कि पानी, हवा और मिट्टी में भी जीवन होता है।

कोट: भगवान महावीर ने कहा - ''तुम्हारा हर कार्य, हर विचार किसी न किसी पर प्रभाव डालता है।''

रात्रि भोजन का वैज्ञानिक आधार: रात्रि भोजन न करने का सिद्धांत स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है और सूक्ष्म जीवों की रक्षा करता है।

7. कर्म और निर्वाण: मोक्ष प्राप्ति का मार्ग : जैन धर्म के अनुसार, जीवन का अंतिम लक्ष्य ''निर्वाण'' या मोक्ष प्राप्त करना है। यह बाहरी शक्तियों पर निर्भर होने के बजाय आत्म निर्भरता पर जोर देता है।

कोट: ''कर्म सिद्धांत आत्मा के विकास का आईना है।''

उदाहरण : अच्छे कर्म आत्मा को मोक्ष की ओर ले जाते हैं, जबकि बुरे कर्म आत्मा को संसार में बांधते हैं।

8. शाकाहार: अहिंसा और करुणा का प्रतीक - जैन धर्म शाकाहार को जीवन का आदर्श मानता है। यह आहार न केवल अहिंसा पर आधारित है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है।

उदाहरण : जैन साधु-साध्वी केवल उबला और सात्विक भोजन ही ग्रहण करते हैं।

9. अनेकांतवाद: सत्य को कई दृष्टिकोणों से देखना - जैन धर्म ''अनेकांतवाद'' के सिद्धांत को मानता है, जो सिखाता है कि सत्य को कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है।

कोट – ''सत्य अनेक है और इसे हर कोण से समझा जाना चाहिए।''

उदाहरण: यह सिद्धांत संवाद और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहित करता है।

10. समानता का भाव: सबके लिए मोक्ष का मार्ग - जैन धर्म सभी जीवों को समान मानता है। यह जाति, लिंग, और वर्ग भेद से ऊपर उठकर मोक्ष प्राप्ति का अधिकार प्रदान करता है।

कोट – ''सब आत्माएं पवित्र हैं और महान बनने की क्षमता रखती हैं।''

11. दिवाली का महत्व: महावीर निर्वाण का स्मरण - जैन धर्म में दिवाली केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि भगवान महावीर के निर्वाण का स्मरण है।

कोट: ''दिवाली आत्मा के प्रकाश का उत्सव है।''

उदाहरण: इस दिन ज्ञान के दीप जलाए जाते हैं जो अज्ञानता के अंधकार को मिटाने का प्रतीक है।

12. धर्मांतरण का विरोध: सहिष्णुता का आदर्श: जैन धर्म दूसरों के धर्म में हस्तक्षेप किए बिना अपने आदर्श साझा करता है। यह अपने आप में आत्मविश्वास और सहिष्णुता का प्रतीक है।

कोट: ''धर्म आत्मा का विकास है, न कि अन्य पर प्रभुत्व।''

13. अंतर्राष्ट्रीय मान्यता: वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लोकप्रियता - जैन धर्म का वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण इसे पश्चिमी देशों में लोकप्रिय बना रहा है।

उदाहरण: अहिंसा और अनेकांतवाद के सिद्धांतों ने वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है।

कोट – ''जैन धर्म आत्मा का विज्ञान है, जो शांति, संतुलन और मुक्ति का मार्ग दिखाता है।''

निष्कर्ष: जीवन जीने का आदर्श मार्ग - जैन धर्म एक वैज्ञानिक, तार्किक, और सहिष्णु जीवन दृष्टि है। यह हमें आत्मनिर्भरता, अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा देता है। यह न केवल मोक्ष का मार्ग दिखाता है, बल्कि जीवन के हर पहलू में संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

मंदिरजी में कला का कार्य करवाएं

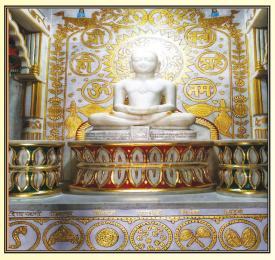

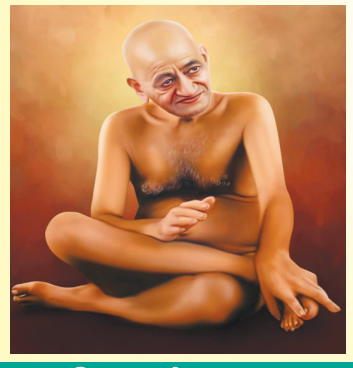

कांच की कला, जैन तस्वीरें
स्वर्ण कला, स्वर्ण कलर

राहुल कुमावत
मो. 9929839938
अन्य 7728066690

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, किशनगढ़ केसरी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

भूमण्डल के प्रथम कर्मपथ प्रदर्शक : प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ

28 जनवरी मोक्ष कल्याणक पर विशेष

भागचंद जैन मित्रपुरा, जयपुर

वर्तमान में इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल के स्थान पर हुंडावसर्पिणी काल, जिसमें असाधारण घटनाएं जो आगमानुकूल नहीं होती हैं, घटती हैं, का संचार हो रहा है। आदिनाथ भगवान इस काल के प्रथम तीर्थंकर थे जिनका जन्म भरत क्षेत्र में हुआ था। भगवान आदिनाथ को कई अन्य नाम ऋषभदेव/ऋषभनाथ, वृषभनाथ, नाभिया, आदिपुरुष, आदि ब्रह्मा, प्रजापति के नाम से भी जाना जाता है।

भगवान ऋषभनाथ का जन्म भारत के पावन शहर अयोध्या की भूमि, जहां मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने माता कौशल्या के गर्भ से जन्म लिया था, पर चैत्र कृष्णा नवमी को उत्तरषाढ़ा नक्षत्र में हुआ था। इनके पिता का नाम राजा नाभिराज जो अयोध्या के राजा थे एवं माता का नाम मरूदेवी था। जैन धर्म के अनुसार यह तृतीय काल था। आदिनाथ का यशस्वती तथा सुनंदा के साथ विवाह हुआ था। यशस्वती से उन्हें 100 पुत्र (चक्रवर्ती राजा भरत सहित) तथा एक पुत्री ब्राह्मी हुए थे। सुनंदा से उन्हें एक पुत्र बाहुबली तथा एक पुत्री सुंदरी हुए थे।

पिछले युग के अंतिम तीर्थंकर भगवान सम्प्रत्ति थे। भगवान आदिनाथ का वंश-क्षत्रिय (इश्वाकू वंश) था। उनकी देहवर्ण-स्वर्ण रंग (नारंगी-पीला) थी। लंबाई/ऊंचाई- 500 धनुष/4920 फीट/1500 मीटर थी। उनकी आयु-84 लाख वर्ष पूर्व थी।

भोगभूमि से कर्मभूमि में परिवर्तन - ऋषभनाथ जी को इस युग के निर्माता के रूप में जाना जाता हैं। इनसे पहले मनुष्य कोई काम नहीं करते थे अर्थात पढ़ना-लिखना, खेती, व्यापार इत्यादि किसी भी चीज का प्रावधान नहीं था। उस समय मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कल्प वृक्ष से पूरी हो जाया करती थीं। लेकिन धीरे-धीरे कल्पवृक्ष की शक्तियां कम होती गयीं एवं अंत में नष्ट हो गई एवं कल्पवृक्ष भी विलुप्त होते गए। कल्पवृक्षों के बाद बिना बोयी हुई धान्य पैदा होती थी। उस समय वर्षा होने से खेतों में अपने आप तरह-तरह के धान्य के अंकुर उत्पन्न होकर समय पर योग्य फल देने वाले हो गए थे। उससे सामान्य जन का जीवन सही चल रहा था। कालांतर में धान्य, औषधि आदि सारी पैदावार नष्ट हो गई थी। भोगभूमि की रचना मिट चुकी थी और कर्मभूमि की रचना प्रारंभ हो रही थी। मनुष्य भूख प्यास से दुखी होने लगे थे। लोगों ने कोई उपाय नहीं सूझने पर राजा नाभिराज की आज्ञानुसार ऋषभनाथ के पास जाकर अपनी व्यथा बताई।

इसके बाद ऋषभनाथ ने पूर्व – पश्चिम विदेहों की तरह ग्राम, नगर आदि का विभाग कर मनुष्य को आवश्यक ज्ञान दिया।

आत्म निर्भरता स्वावलंबन का ज्ञान - उन्होंने मनुष्य को आजीविका चलाने हेतु षट्-कर्मों आदि का ज्ञान दिया -

1- **असि** – शस्त्र चलाना, रक्षा करने के लिए अर्थात सैनिक कर्म

2- **मसि** – लिखने का कार्य अर्थात लेखन

3- **कृषि** – खेती करना और अन्न उगाना

4- **वाणिज्य** – व्यापार से संबंधित कार्य

5- **शिल्प** – दस्तकारी अर्थात् हाथ की कारीगरी से वस्तुएं बनाना, मूर्तियों, नक्काशियों, भवनों इत्यादि का निर्माण

6- **विद्या** – ज्ञान प्राप्त करने से संबंधित कर्म, गायन, वाद्य, नृत्य, चित्रकारी आदि।

उपरोक्त 6 कार्यों के आधार पर प्रारंभ में समाज को तीन भागों में विभक्त किया गया था:

1- **क्षत्रिय** – असि अर्थात् अस्त्र आदि के द्वारा दूसरों की रक्षा करके आजीविका करने वालेय

2- **वैश्य** – मसि, कृषि और वाणिज्य के द्वारा अपनी आजीविका करने वाले

3- **शूद्र** – शिल्प एवं विद्या के द्वारा अपनी आजीविका करने वाले।

इस प्रकार प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने ही लोगों को आजीविका निर्वहन के साथ अपनी आत्मा के कल्याण के लिए विभिन्न क्रियाओं का उपदेश दिया। उन्होंने सुनियोजित तरीके से भवन निर्माण करना, नगर बसाना, खेती करके अन्न उगाना और उससे भोजन बनाना, शिक्षा प्राप्त करना और उससे समाज में नियमों की स्थापना करना, व्यापार करके उन्नति करना और अर्थ कमाना, अपनी, अपने परिवार एवं देश की रक्षा करना तथा व्यवस्थाओं को लिपिबद्ध करना इत्यादि सिखाया।

महिला शिक्षा के साथ महिला सशक्तिकरण - ऋषभनाथजी ने ही लोगों को सुनियोजित तरीके से सभी तरह के कार्य करना सिखाया था। इसी तरह अपनी सुपुत्रियों ब्राह्मी को 'लिपि विद्या' (scriptology) एवं सुंदरी को 'अंक विद्या' (numerology) का ज्ञान कराकर, इन विद्याओं को आम जन में प्रसारित करवाया। अपने पुत्रों को भी विभिन्न प्रकार की विद्याओं और कलाओं में प्रवीण किया।

सुशासन का निर्वहन – इस सृष्टि की सुव्यवस्था की, लोग उन्हें सृष्टि ब्रह्मा एवं उस युग को कृतयुग नाम से पुकारने लगे। इस तरह से मनुष्य को मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति एवं जीवन यापन का तरीका सिखाने का श्रेय ऋषभनाथ जी को जाता है। उन्होंने प्रथम बार अपनी नगरी अयोध्या में शासन-व्यवस्था, नियम-सिद्धांत, अधिकार-कर्तव्य इत्यादि की स्थापना की थी। इसके बाद सब कुछ नियमों के अनुसार चलने लगा था तथा धर्म की स्थापना हुई थी। ऋषभनाथ का प्रजा के ऊपर पूर्ण व्यक्तित्व प्रगट हो गया, तब महाराज नाभिराज ने इन्द्र एवं सभी देवों के निवेदन से उनका राज्याभिषेक किया। इस समाचार से चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ गई। राजा ऋषभ नाथ ने अपने प्रथम उद्बोधन में प्रभावक शब्दों में धर्म, अर्थ आदि पुरुषार्थ का स्पष्ट विवेचन किया। अपनी विनयशीलता दर्शाते हुए सृष्टि का भार वहन करने के क्रम में राज्य करना स्वीकार किया। प्रजा को सुव्यवस्थित बनाने के लिए कार्य विभाजन कर योग्यता के अनुसार कार्य भार सौंप दिया। इस व्यवस्था से लोग सुखमय जीवन व्यतीत करने लगे थे। उन्होंने द्रव्य क्षेत्र, काल और भाव का ध्यान रखते हुए दंड विधान का भी प्रावधान किया। उन्होंने तिरेसठ लाख पूर्व तक राज किया।

वैराग्य की ओर – एक बार देवता व स्वर्ग के राजा इंद्र देव आदिनाथ की सभा में आये हुए थे। जब वे दोनों नर्तकियों का नृत्य देख रहे थे, उसी समय नीलांजना नामक एक

तीर्थंकर आदिनाथ भगवान

नृतकी की आयु पूरी हो गयी और उसकी मृत्यु हो गयी थी। यह देखकर भगवान आदिनाथ को मृत्यु के दुखद सत्य का ज्ञान हुआ। उन्होंने उसी समय सांसारिक मोह-माया, राजपाट इत्यादि त्याग कर सन्यासी बन जाने का निर्णय लिया। इसी बीच उन्होंने अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजा घोषित कर दिया था और बाकि पुत्रों में अन्य राज्य बांट दिए थे। इस युग के इस धरा पर प्रथम चक्रवर्ती भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारत पड़ा है।

कालांतर में भरत ने ब्राह्मण वर्ण का प्रारंभ किया। साधना के मार्ग का निश्चय करने के बाद देवता गण ऋषभनाथ की पालकी को अयोध्या के समीपवर्ती सिद्धार्थ नामक वन में ले गए। वहां ऋषभनाथ ने चंद्रकांत मणि शिला पर विराजित होकर वस्त्रों का त्याग कर दिया और दिगंबर अवस्था में आ गए एवं पंच मुष्ठियों से केशलोंच कर लिया एवं समस्त परिग्रहों का त्याग कर चैत्र कृष्णा नवमी के दिन जिन दीक्षा ग्रहण की। ऋषभदेव जी के त्याग को देखते हुए उनके साथ आए कई राजा व प्रजा के लोगों ने भी साथ ही सन्यास ले लिया था। वन में ऋषभनाथ छः माह का अनशन धारण किए हुए एक आसान पर बैठे हुए थे। साथी राजा एवं प्रजा के लोग जो मुनि बन गए थे, भूख प्यास से व्याकुल होकर मुनिमार्ग से भटक कर जंगलों में चले गए थे।

तप मार्ग से ही आत्म कल्याण – ध्यान करते करते जब छः माह व्यतीत हो गए तो ऋषभदेव ने ध्यान मुद्रा समाप्त कर आहार लेने का विचार किया। यद्यपि उन्हें भूख - प्यास की पीड़ा नहीं थी, लेकिन वे आहार को निकले ताकि आने वाले समय में श्रावकों द्वारा मुनिराजों को आहार हेतु पड़गाहन आदि विधि एवं मुनिराजों द्वारा आगमानुसार आहारचर्या का पालन हो सकें। उन्होंने गांवों में विहार करना शुरू किया। ग्रामवासी आहार के बजाय उन्हें आभूषण, हीरे-मोती, बहुमूल्य वस्तुएं आदि भेंट स्वीकार करने का आग्रह करते थे, जिनमें उनका कोई राग नहीं था। चूँकि वह प्रथम तीर्थंकर थे, इसलिए लोगों को यह नहीं पता था कि उन्हें आहार में क्या दें एवं किस विधि से दे। इससे उनके साथ के लोगों में व्याकुलता होने लगी और वे भूख-प्यास से बेहाल होने लगे। तब उनमें से कईयों ने जैन धर्म में से कई अन्य मतों/ संप्रदायों की शुरुआत की थी। इसी तरह भगवान आदिनाथ को बिना आहार ग्रहण किए हुए 13 माह से अधिक, यानी 398 दिन हो गए थे। एक दिन वे विहार करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे। वहां राजा सोमप्रभ एवं युवराज श्रेयांस कुमार दोनों भाई दौड़कर मुनि ऋषभनाथ के पास आए। ऋषभनाथजी को देखते ही श्रेयांस कुमार को जाति स्मरण हो गया एवं पूर्वभव में दिगंबर मुनि को दिए गए आहार का दृश्य सामने आ गया। प्रातःकाल का समय था। ऋषभनाथ का नवधाभक्ति सहित पड़गाहन के साथ श्रेयांस कुमार ने राजा सोमप्रभ एवं रानी लक्ष्मीमती के साथ आहार करवाया। प्रथम आहार के रूप में इक्षुरस का पान कराया। उन्होंने लगभग 13 माह से अधिक समय के बाद कुछ ग्रहण किया था, इसलिए इस दिन का महत्व बढ़ गया था। ऋषभनाथ के आहार करने के प्रभाव से राज महल में भोजन आदि अक्षय निधि के रूप में उपलब्ध हो गई थी। सभी आगंतुकों के भोजन ग्रहण करने के उपरांत भी भोजन की मात्रा कम नहीं हो रही थी। यह दिन वैशाख शुक्ल तृतीया थी जिसे आज इसी कारण से अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है।

केवलज्ञान प्राप्ति एवं दिव्य देशना - भगवान आदिनाथ ने लगभग एक हजार वर्षों तक कठोर तपस्या की। पुरीमताल के पास शकट नामक वन में वटवृक्ष के नीचे पद्मासन लगाकर ध्यान में बैठ गए। उन्होंने चार घातियां कर्मों का नाश कर फाल्गुन कृष्ण एकादशी को ध्यानावस्था में कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया। यहां पर कैवल्य ज्ञान से अर्थ भूत, वर्तमान व भविष्य का संपूर्ण ज्ञान प्राप्ति से है।

इसके बाद इंद्र देव व बाकी देवताओं ने मिलकर कुबेर की सहायता से भगवान आदिनाथ के उपदेश देने के लिए समवशरण की स्थापना की। इसमें वे देवताओं, मनुष्यों, मुनियों, तिर्यचों इत्यादि को धर्म का उपदेश दिया करते थे। भगवान आदिनाथ के 84 गणधर, 84 हजार मुनि (साधू या जैन भिक्षु, पुरुष) तथा 3.5 लाख के आसपास साध्वियां (जैन भिक्षु, महिला) थी। समवशरण में भगवान के मुख से दिव्यवाणी प्रकट हुई जो ओंकार रूप में थी। उन्होंने अतिशयपूर्ण दिव्य ध्वनि में धर्म-अधर्म का स्वरूप समझाकर सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रत्नत्रय एवं जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन सात तत्वों काय जीव, पुद्गल, धर्म-अधर्म, आकाश और काल इन छः द्रव्यों का, पुण्य पाप का लोक - अलोक का स्वरूप बतलाया था। उन्होंने अपनी दिव्य देशना में कहा कि जब तक प्राणियों की दृष्टि भौतिक पदार्थों में उलझी रहेगी, तब तक उसे आत्मीय आनंद का अनुभव नहीं हो सकता। उसे प्राप्त करने के लिए मोह छोड़कर कठिन तपस्या, इंद्रियों पर विजय, आत्म ज्ञान में अचल होने की आवश्यकता है। ''अप्पा सो परमप्पा'' उन्होंने आत्मा को परमात्मा बताया। सभी तीर्थंकरों ने इस दर्शन को आधार बनाकर स्व-पर का कल्याण पथ दिखलाया। यह दर्शन जैन धर्म को अन्य धर्मों से अलग करता है।

मोक्षमार्ग की ओर प्रशस्त – केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात आदिनाथ तीर्थंकर के रूप में 99 हजार वर्ष तक पृथ्वी पर रहे और धर्म का प्रचार-प्रसार किया। जब उनकी आयु पूर्ण होने के 14 दिन शेष रह गए थे तब वे अष्टपद पर्वत (कैलाश पर्वत) चले गए थे। अंत में उन्होंने शेष चार अघातिया कर्मों का नाश कर माघ मास की कृष्ण चतुर्दशी के दिन निर्वाण/मोक्ष को प्राप्त कर संसार के आवागमन से मुक्त हो गए। इस दिन को जैन धर्म में भगवान आदिनाथ के निर्वाणोत्सव या मोक्ष प्राप्ति के रूप में मनाया जाता है।

उनके साथ ही उनके कई भक्तों/मुनियों ने समाधि ले ली थी तथा मोक्ष को प्राप्त किया था। इसके पश्चात स्वयं इंद्र देव सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत आये और भगवान आदिनाथ के शरीर (नख और बाल) का अंतिम संस्कार किया। कुछ वर्षों में तृतीय काल का अंत हो गया था तथा चतुर्थ काल शुरू हुआ। इनके दूसरे पुत्र बाहुबली ने अपने ज्येष्ठ भ्राता भरत के साथ चक्रवर्ती विजय यात्रा में अधीनता स्वीकार न करते हुए जल युद्ध, चक्षु युद्ध एवं मल्ल युद्ध में स्वयं के विजयी होने पर भी राजपाट को छोड़कर मोक्षमार्ग अपनाया एवं निशस्त्रीकरण और त्याग का संदेश दिया। हिंदू धर्म के कई ग्रंथों में ऋषभदेव या आदिनाथ जी के नाम का महापुराण आदि में वर्णन मिलता है। सर्वप्रसिद्ध श्रीमद् भागवत पुराण में भी लिखा गया है कि जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव जी थे। उन्हें एक महान ऋषि व तपस्वी की संज्ञा दी गयी है। मार्कण्डेय पुराण, वायु पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्मांड पुराण, स्कन्द पुराण आदि प्राचीन ग्रंथों में ऋषभदेव का पूरा वर्णन है।

डॉ. राधाकृष्णन, रामप्रसाद चंदा, डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी, टी एन रामचंद्रन, डॉ. भंडारकर आदि इतिहासकार ने ऋषभदेव की जीवनी पर अपने आलेखों में उद्धृत किया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेष आदि ऋषभ देव की आराधना का वर्णन करते हैं। मथुरा म्यूजियम में दूसरी सदी की कायोत्सर्ग मुद्रा में वृषभदेव जिन की मूर्ति है। इस तरह प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को जैन धर्म का संस्थापक मानने में एक मत है। सातवीं शताब्दी में आचार्य मानतुंग जी द्वारा संस्कृत में रचित महाग्रंथ भक्तामर स्तोत्र में आदिनाथ भगवान के गुणों की स्तुति की है। इसमें वर्णित सभी 48 काव्यों का पाठ करने से मानव जीवन में आने वाले सभी कष्ट दूर होते हैं। इन काव्यों का मनोयोग से पाठन करने हीलिंग थेरेपी के रूप में किया जा रहा है।

जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ, मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419, Email- jaingazette2@gmail.com www.jaingazette.com

सतना में 'मूकमृत्तिका' महाकाव्य एवं 'धीवरोदयम' चम्पूकाव्य का भव्य लोकार्पण समारोह एवं राष्ट्रीय विद्वत्संवाद सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न

सम्पूर्ण मानवता के लिए एक अमूल्य निधि है आचार्यश्री का साहित्य - आचार्यश्री समय सागर जी महाराज

निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज ने सुनाए अनेक अविस्मरणीय दुर्लभ संस्मरण

नवाचार्य श्री समय सागरजी महाराज का रहा ससंघ सन्निध्य

(सतना से लौटकर डॉ. सुनील 'संचय', ललितपुर की रिपोर्ट)

सतना। संत शिरोमणि आचार्यश्रेष्ठ श्री विद्यासागर जी महाराज की कालजयी कृति 'मूकमाटी' के संस्कृत अनुवाद 'मूकमृत्तिका' एवं ''धीवरोदयम् चंपूकाव्य' का भव्यातिभव्य लोकार्पण समारोह व राष्ट्रीय विद्वत्संवाद 11 व 12 जनवरी 2025 को दो दिवसीय आयोजन सतना, मध्य प्रदेश में दिगम्बर जैन समाज सतना के आयोजकत्व में परमपूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज जी महाराज, निर्यापक श्रमण श्री अभयसागर जी महाराज, आर्यिका श्री ऋजुमती माता जी सहित 16 मुनिराज, 11 आर्यिका, 11 क्षुल्लक जी के मंगल सान्निध्य में अभूतपूर्व सफलता के साथ संपन्न हुआ। संयोजक डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र भैया, जयपुर एवं डॉ. सोनल कुमार जैन, दिल्ली रहे। निर्देशक पंडित सिद्धार्थ जैन, सतना एवं प्रबंध संयोजक पंडित महेश जैन सतना रहे। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की समाधि के उपरान्त उनकी जीवन्त स्मृतियों की छाया में उनकी कालजयी कृतियों पर दो दिन में चार सत्रों में सारगर्भित चर्चा-परिचर्चा हुई।

'मूकमृत्तिका' एवं ''धीवरोदयम् चंपूकाव्य' का भव्यातिभव्य लोकार्पण: इस मौके पर 11 जनवरी को 'मूकमृत्तिका' का भव्य लोकार्पण विद्वानों एवं अतिथियों द्वारा किया गया। मूकमाटी का संस्कृत अनुवाद संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शिमला ने किया है। ''धीवरोदयम् चंपूकाव्य' का विमोचन 12 जनवरी को अतिथियों और विद्वानों द्वारा किया गया। कृतियों के कुशल संपादक प्रोफेसर जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. ब्र. धर्मेन्द्र कुमार जैन, जयपुर एवं डॉ. सोनल कुमार जैन, दिल्ली ने कृतियों का विमोचन कराने के बाद आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के कर कमलों में एक-एक प्रति भेंटकर आशीर्वाद लिया।

सम्पूर्ण मानवता के लिए अमूल्य निधि आचार्यश्री का साहित्य: इस अवसर पर आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने कहा कि आगम अथाह है, श्रुत का अंत नहीं है, समय कम है। 'मूकमाटी' क्या कह रही है इसको समझो। गुरुदेव ने जो कहा है वह आत्मसात हो जाय तो मूक माटी की सार्थकता है। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अवर्णनीय साधक थे। उनको तलस्पर्शी ज्ञान था। आचार्यश्री ने कहा कि मन को संयमित करना बहुत कठिन है। जो ज्ञान के साथ-साथ चारित्र के क्षेत्र में आगे बढ़ता है उसी का मन संयमित हो सकता है। आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी ने कहा था कि तुम पुण्य के उदय में दीक्षित हो गए हो लेकिन मन को संयमित रखना। आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज ने साधना के साथ-साथ साहित्य का सृजन किया। आचार्य विद्यासागर जी की विद्वत्ता, तपस्या और आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतिबिंब उनके साहित्य में देखा जा सकता है। मूकमाटी महाकाव्य में आचार्य गुरूदेव विद्यासागरजी ने अपनी गहन आध्यात्मिक समझ और ज्ञान के ताने-बाने को बड़ी ही रोचकता से काव्य के माध्यम से साझा किया है। गुरुदेव के साहित्य में जीवन की सार्थकता, आध्यात्मिक जागृति और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने वाले विचारों का समावेश है। दो दिवसीय विद्वत्संगोष्ठी में सबने आनंद की अनुभूति का अनुभव किया है, यह अवर्णनीय है। आचार्य श्री समयसागर जी महाराज ने संगोष्ठी में आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज से जुड़े अनेक प्रसंग भी सुनाए। आचार्यश्री द्वारा दिये गये सारगर्भित प्रवचनों से अपने मन और इन्द्रियों को जीतकर संयमित होकर मनुष्य पर्याय सार्थक करने का प्रभावी सन्देश सभी को प्राप्त हुआ है।

50 विश्वविद्यालयों में मूकमाटी महाकाव्य पाठ्यक्रम में है शामिल: निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी आयोजन में निर्यापक श्रमण मुनि श्री अभयसागर जी महाराज के तथ्यपरक संस्मरणात्मक प्रवचन एक अविस्मरणीय दुर्लभ उपलब्धि रही है। उन्होंने बताया कि आचार्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज सहजता और सरलता से अपनी बात हम शिष्यों को सिखा देते थे। गुरुदेव की प्रेरणा से 156 गौशालाएं चल रही हैं। 'दयोदय एक्सप्रेस' का नाम आचार्यश्री की प्रेरणा से ही हुआ था। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी गुरुदेव के दर्शन करने आए थे तब आचार्य श्री गुरुदेव ने उनसे कहा था कि देश को प्रगति की ओर ले जाना है तो 'आत्मनिर्भर भारत' बनाओ, तभी से प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत की बात शुरु कर दी थी। नई शिक्षा नीति में मानव मात्र के लिए, देश की उन्नति के लिए आचार्यश्री के अनन्त उपकार हैं। गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज ने 25 अप्रैल 1984 में जबलपुर (म.प्र.) में 'मूकमाटी' लिखना शुरू की थी तथा 11, फरवरी 1987 को सिद्धक्षेत्र नैनागिरी (छतरपुर) में इसका समापन किया था। 1023 दिन में यह कृति पूर्ण हुई थी। उन दिनों जो देश में आतंकवाद के कारण जो विषम परिस्थितियां थीं उनका वर्णन मूकमाटी में किया गया है। देश के 50 विश्वविद्यालयों में 'मूकमाटी' महाकाव्य पाठ्यक्रम में शामिल है। मूकमाटी का 12 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। धीवरोदय गुरुदेव ने 1998 में लिखना शुरू किया था और 2001 में नेमावर में इसका समापन किया था।

विभिन्न कृतियों का भी हुआ विमोचन: आयोजन में दृष्टांत समुच्चय, स्मरणांजलि (पंडित गुलाबचंद्र पुष्प), भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की डाक टिकट एवं डाक आवरण, आचार्य श्री विद्यासागर जी पर भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी विशेष आवरण संग्रह, सर्वोदयी संत की राष्ट्रीय देशना, मिरेकल, ध्यानोपदेश, लघु नयचक्र, परमागमसार, जैन विद्या ज्योतिष पंचांग, संस्कार सागर पत्रिका (जनवरी अंक) आदि अनेक कृतियों का विमोचन किया गया।

6 फरवरी को मनाएं प्रथम समाधिमरण दिवस: निर्यापक श्रमण अभयसागर जी महाराज ने शास्त्रि-परिषद एवं विद्वत् परिषद के विद्वानों से कहा कि आगामी 6 फरवरी को आचार्यश्री की प्रथम पुण्यतिथि आ रही है। दोनों परिषद के विद्वान, साधुवृन्द एवं समाज भी इस अवसर पर अपनी सार्थकता भूमिका का निर्वाह करें।

प्रत्येक भारतीय के लिए प्रणम्य है मूकमाटी: -कुलगुरु राजकुमार आचार्य आयोजन में अवधेश प्रताप विश्वविद्यालय रीवा के कुलगुरु राजकुमार आचार्य ने कहा कि मूकमाटी एक ऐसा ग्रंथ है जो प्रत्येक भारतीय के लिए प्रणम्य है। उन्होंने 2021 का जबलपुर में आचार्यश्री के साथ संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से पूंछा की नई शिक्षा नीति में क्या होना चाहिए? तो उन्होंने एक लाइन में उत्तर दिया था कि 'शिक्षा में भारत को पढ़ाइये।'

आचार्यश्री की देन अविस्मरणीय: - राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी आयोजन में शामिल विशिष्ट अतिथि मध्यप्रदेश सरकार की राज्यमंत्री माननीय श्रीमती प्रतिमा बागरी ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का योगदान अविस्मरणीय है। उनके दिखाए पदचिह्नों पर हम सभी चलें।

यशस्वी व्रती कवि श्री चन्द्रसेन जी भोपाल की गुरुभक्ति से ओतप्रोत काव्यपाठ के श्रवण से सभी श्रोता गुरुभक्ति में निमग्न हो गये।

दस देशों से आए श्रद्धालुओं ने लिया आशीर्वाद: इस मौके पर पुष्पकरणी पार्क सतना का नाम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के नाम से रखने की घोषणा की गई। आयोजन में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समय सागर जी महाराज की पूजन भक्ति संगीत के साथ की गई जिसका मंत्रोच्चार आर्यिका ऋजुमती माता जी द्वारा किया गया। आयोजन में दस देशों से आए श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। अफ्रीका से नारियल लेकर आए अजीत गांधी मुंबई ने नारियल भेंट किया। इसी नारियल से कमण्डलु तैयार होते हैं।

महत्वपूर्ण आलेख हुए प्रस्तुत: इस दौरान चार सत्रों में दोनों कृतियों से संदर्भित शोधालेख विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए। जिसमें प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने मूकमृत्तिका, प्रोफेसर जानकी प्रसाद द्विवेदी वाराणसी ने धीवरोदय में माहेन्द्र व्याकरण का प्रयोग, डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत ने मूकमृत्तिका में जैन सिद्धांत, डॉ. जय कुमार जैन, मुजफ्फरनगर ने मूकमृत्तिका के संस्कृत अनुवाद की विशेषताएं, डॉ. ब्र. धर्मेंद्र भैया, जयपुर ने मूकमृत्तिका में जीवनमूल्य, डॉ. सोनल कुमार जैन, दिल्ली ने धीवरोदय की मूल्यात्मक मीमांसा, डॉ. आशीष जैन, सागर ने मूकमृत्तिका में सूक्तियां, पंडित शिखर जैन, दिल्ली ने चम्पूकाव्य की परंपरा में धीवरोदय का स्थान, पंडित विनोद जैन शास्त्री, गौना धीवरोदय का उपजीव्य एवं कथा विस्तार विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनपर चर्चा-परिचर्चा विद्वानों द्वारा की गयी।

मूकमाटी एनीमेशन फिल्म का किया गया प्रदर्शन: 11 जनवरी को रात्रि में 7.30 बजे से परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की कालजयी कृति मूकमाटी पर आधारित मूक माटी एनीमेशन फिल्म को दिखाया गया जिसे देखने श्रद्धालु उमड़ पड़े। संगोष्ठी में समागत विद्वानों ने भी फिल्म को देखा और इसे बहुत ही अच्छा कदम बताया।

वर्तमान में जैन श्रावक अपनी पहचान खोता जा रहा है - एक चिंता

चिरंजी लाल बगड़ा, कोलकाता

- एक समय था जब नल से छन्ना लगाकर लोटे मे जल भरते व्यक्ति को देख कर लोग समझ जाते थे कि यह कोई जैन श्रावक है।
- किसी अजैन व्यक्ति की बारात में एक व्यक्ति भी जैन होता था तो उसके लिए अलग से सूर्यास्त से पूर्व भोजन की व्यवस्था अनिवार्य हो जाती थी।
- रसोई घर तो छोड़े, घर में भी आलू प्याज का प्रवेश अकल्पनीय था।
- बिना देव दर्शन के बच्चों को नाश्ता भी नहीं मिलता था।
- और अब वर्तमान परिस्थिति को देखें तो जल छानने के नाम पर सिर्फ एक औपचारिकता रह गयी है, नल पर बांध दिया छन्ना और छोड़ देते हैं जीव राशि को उसमें मरने के लिए।
- शादी विवाह की बात तो छोड़ो, अब तो मन्दिर हो या कोई धार्मिक आयोजन, बोतल बन्द पानी का उपयोग आम रिवाज हो गया है।
- जैन धार्मिक व्यक्ति के विवाह समारोह में भी सूर्यास्त से पूर्व भोजन करने वालों को गर्व से नहीं, समस्या के रूप में देखा जाता है। अलग से एक जैन फूड नाम से कॉउंटर लगाया जाने लगा है। शत् प्रतिशत कार्यक्रम रात्रि में होने लगे हैं। अर्ध रात्रि तक खाना पीना चलता रहता है।
- जैन श्रावक की तीन पहचान थीः देव दर्शन, जल छानकर पीना और सूर्यास्त से पूर्व भोजन। अब तीनों आज अपवाद बन चुके हैं।
- श्रावक के दैनिक षट आवश्यक में दान भी एक आवश्यक क्रिया के रूप में शामिल है। जैन समाज के दानशीलता की मिशाल दी जाती है। आज भी सर्वाधिक दान देने का चलन समाज में है, परंतु कितने जैन व्यक्ति हैं जो नियम से प्रतिदिन दान देने के अपने आवश्यक का पालन करते हैं। अब तो दान के साथ, नाम और मान की भूख, जुड़ गयी है, कर्तव्य-बोध गौण हो गया है।
- दर्शन पर जब प्रदर्शन हावी हो जाता है, तब वैसा ही होता है, जैसे जड़ सूखी और पत्तों को जल सिंचन करना।
- बाह्य-दृष्ट्या वर्तमान में हमारा धर्म खूब फल फूल रहा है, धार्मिक आयोजनों की सब जगह बाढ़ है, मंदिरों में बहार है, पुण्य का थोक में व्यापार है, परंतु सर्वत्र राग- द्वेष की भरमार है, अहम का द्वंद चरम पर है, नैतिकता सिसक रही है, श्रावकाचार विलुप्त है और सबसे दुखद स्थिति यह है कि इन पहलुओं पर किसी भी धर्म गुरू को चिंता नहीं है, किसी के एजेंडा में ये बिंदु प्राथमिकता में नहीं हैं।
- न धर्मो धार्मिकेबिना, जैन श्रावक की पहचान का यह संकट, हमारी संस्कृति के लोप का कारण न बने, इस पर सबको गंभीरता से सोचना चाहिए।

जैन तीर्थ सिहोनियां में छः दिवसीय पंचकल्याणक महोत्सव

5 से 10 फरवरी तक होगा भव्य आयोजन

मुरैना (मनोज जैन नायक)। ग्यारहवीं शताब्दी का अति प्राचीन दिगंबर जैन तीर्थ अतिशय क्षेत्र सिहोनियां जी में श्री मज्जिनेंद्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ 05 फरवरी से 10 फरवरी तक विभिन्न धार्मिक आयोजनों के साथ होने जा रहा है। जैन समाज अम्बाह के अध्यक्ष एवं अतिशय क्षेत्र सिहोनिया के परम संरक्षक जिनेश जैन द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार दिगंबर जैन समाज के ख्याति प्राप्त संत अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में होने जा रहे श्री मज्जिनेंद्र पंचकल्याणक महोत्सव में कमल मंदिर, पंच मानस्तंभ, श्री चंद्रप्रभु जिनालय सहित 31 फुट की उतंग भगवान शांतिनाथ की प्राण प्रतिष्ठा होगी।

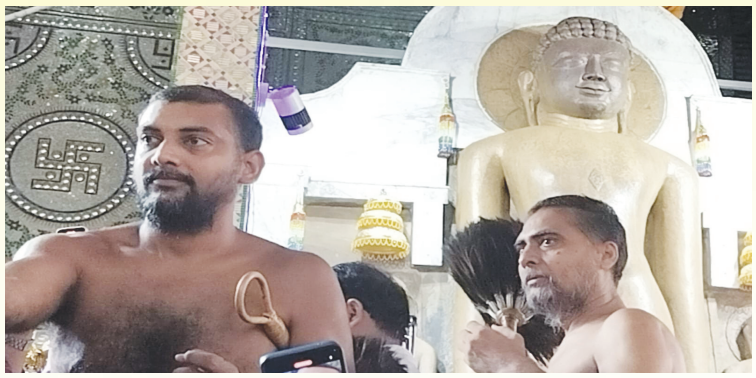

इस महोत्सव को संपन्न कराने हेतु पूज्य आचार्यश्री वसुनंदी जी महाराज का अपने 26 शिष्यों के साथ जैन तीर्थ सिहोनिया जी में आगमन होगा। संभावना व्यक्त की जा रही है कि पूज्य गुरुदेव का 02 या 03 फरवरी को क्षेत्र पर भव्य मंगल आगमन हो सकता है। इस आयोजन की विशालता एवं भव्यता को देखते हुए अलग से आयोजन समिति का गठन किया गया है। जिसमें मुख्य संयोजक धन्नालाल जैन निर्माण विहार दिल्ली, अध्यक्ष रूपेश जैन मेघा फरूट्स दिल्ली, महामंत्री सुनील जैन मोना जनरेटर दिल्ली एवं कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश जैन दिल्ली को बनाया गया है। अन्य सभी व्यवस्थाओं के लिए संयोजक मनोनीत किए गए हैं। श्री मज्जिनेंद्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठ महोत्सव में तीर्थकरों के पांच कल्याणकों गर्भ, जन्म, ज्ञान, तप एवं मोक्ष कल्याणक के संस्कार किए जाते हैं। अंतिम दिन पूज्य दिगम्बराचार्यों द्वारा पाषाण एवं अष्टधातु की जिन प्रतिमाओं को सूर्य मंत्र देकर प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। महोत्सव की सभी क्रियाएं प्रतिष्ठाचार्य मनोज जैन शास्त्री अहारजी के आचार्यत्व में संपन्न होंगी। मुख्य प्रतिष्ठाचार्य के साथ 11 अन्य विद्वानों की टीम भी सहयोगी के रूप में उपस्थित रहेगी। संगीतकार के रूप में ऋषभ जैन सरस दिल्ली अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। छः दिवसीय आयोजन में 05 फरवरी को ध्वजारोहण के साथ गर्भ कल्याणक पूर्व रूप, 06 फरवरी को गर्भ कल्याणक उत्तर क्रिया, 07 फरवरी को जन्म कल्याणक, 08 फरवरी को तप कल्याणक, 09 फरवरी को ज्ञान कल्याणक, 10 फरवरी को मोक्ष कल्याणक के संस्कार किए जायेंगे।

ज्ञातव्य हो कि जिला मुख्यालय मुरैना से 33 किलोमीटर की दूरी पर (अम्बाह की ओर) एक विशाल एवं भव्य जैन मंदिर स्थापित है। जिसमें ग्यारहवीं शताब्दी की जैन तीर्थकर भगवान शांतिनाथ प्रभु की 16 फुट उतंग खड्गासन प्रतिमा एवं उनके आजूबाजू में भगवान कुंथनाथ प्रभु और भगवान अरहनाथ प्रभु की प्रतिमाएं विराजमान हैं। इस तीर्थ की विशेषता यह है कि ये तीनों प्रतिमाएं पाषाण की एक ही शिला पर बनी हुई हैं। साथ ही उक्त मूर्तियां उसी स्थान पर विराजमान हैं, जहां से ये खुदाई में प्राप्त हुई थी।

सिहोनिया जी कमेटी के संरक्षक आशीष जैन सोनू ने बताया कि इस आयोजन में संपूर्ण भारतवर्ष से हजारों की संख्या में जैन धर्मावलंबियों के आने की संभावना को देखते हुए कमेटी ने तैयारियां प्रारंभ कर दी हैं। आने वाले सभी बंधुओं के आवास एवं भोजनादि की समुचित व्यवस्था क्षेत्र पर की जा रही है। श्री अतिशय क्षेत्र सिहोनिया कमेटी, जैन युवा क्लब, सोनू मित्र मंडल ने सभी साधर्मी बंधुओं से कार्यक्रम में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होने की अपील की है।

पुणे से 45 किमी दूर बना अभय प्रभावना म्यूजियम एंड नॉलेज सेंटर

400 करोड़ से तैयार देश का पहला डिजिटल म्यूजियम शुरू, जैन इतिहास से रूबरू कराएगा

भारत का पहला डिजिटल म्यूजियम अभय प्रभावना म्यूजियम एंड नॉलेज सेंटर दुनियाभर के दर्शकों के लिए खुल गया है। मुंबई-पुणे राजमार्ग पर पारवड़ी क्षेत्र स्थित इस म्यूजियम को तैयार करने में करीब 12 साल का समय लगा है। इसके अलावा इसके निर्माण में लगभग 400 करोड़ रुपए की लागत आई है। यह जैन धर्म के इतिहास तथा दर्शन से रूबरू कराएगा। पुणे से करीब 45 किमी दूर इंद्रायणी नदी के किनारे और 2200 वर्ष पुरानी पीली जैन गुफाओं के करीब स्थित यह म्यूजियम 3.5 लाख वर्गफीट में फैला है। परिसर अभय प्रभावना म्यूजियम एंड नॉलेज सेंटर करीब 50 एकड़ में फैला चित्तौड़गढ़ दुर्ग की जैसलमेर के पत्थरों से तैयार भव्य प्रतिकृति है। इसके 50 एकड़ में विशेष रूप से डिजाइन 30 दर्शक दीर्घाएं हैं, जिनमें अद्भुत कारिगरी, क्यूरेटेड इंस्टॉलेशन और जैन मूल्य के दर्शन होते हैं। यहां लगभग 350 से अधिक कलाकृतियां, मूर्तियां और प्रतिकृतियां हैं।

– शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

पूर्णायु आयुर्वेदिक चिकित्सालय कुंडलपुर द्वारा स्वर्ण प्राशन संस्कार शिविर का आयोजन

जयकुमार जैन जलज

कुंडलपुर दमोह। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से युगश्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रथम समाधि दिवस के उपलक्ष्य में पूर्णायु आयुर्वेदिक चिकित्सालय कुंडलपुर द्वारा स्वर्ण प्राशन शिविर का आयोजन किया गया। स्वर्ण प्राशन एक महत्वपूर्ण संस्कार है इसे हम इम्यूनिटी बूस्टर भी कहते हैं, यह पूर्ण रूप से औषधि है इसके सेवन से बच्चों की मेमोरी पावर बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, बच्चों का वजन, लंबाई बढ़ती है, हड्डियां मजबूत होती हैं। स्वर्ण प्राशन शिविर में प्राथमिक शाला कुंडलपुर, शासकीय माध्यमिक हायरसेकेंडरी स्कूल कुंडलपुर एवं पूर्णायु में लगभग 700 बच्चों को स्वर्ण प्राशन डॉक्टर अरुण जैन मुख्य चिकित्सा अधिकारी पूर्णायु कुंडलपुर, प्रतीक जैन फार्मासिस्ट, मानसी जैन रिसेप्शनिस्ट एवं समस्त स्टाफ पूर्णायु चिकित्सालय कुंडलपुर के द्वारा कराया गया।

गुरू आज्ञा से गुरुचरणों की ओर विहार

सुमत लल्ला

आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज के परम शिष्य परम पूज्य विद्याशिरोमणि आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती मुनिश्री 108 सहजसागर जी महाराज, मुनिश्री 108 मोक्षसागर जी महाराज ससंघ की मंगल आगवानी बडकस चौक महल नागपुर से चन्द्रप्रभु मंदिर, निकालस मंदिर चौक, परवार मंदिर में मुनि संघ का आगमन हुआ, कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन हस्ते गोकलचंद बड़कूर, रमेश मिल्टन, दिनेश जैन, सुमत लल्ला जैन, आनंद जैन, आशीष जैन, जीतेन्द्र जैन, मनीष जैन, अजय मामू, अरविन्द जैन, संतोष बैसाखिया, शीतल प्रसाद ने किया। मुनिश्री ने आशीष वचन देते हुए कहा कि सत्य अहिंसा मार्ग सर्वोपरि मार्ग है, इसको जैन ही नहीं जन जन को अपने जीवन में उतारना चाहिए तभी खुद का, परिवार का और देश का कल्याण होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

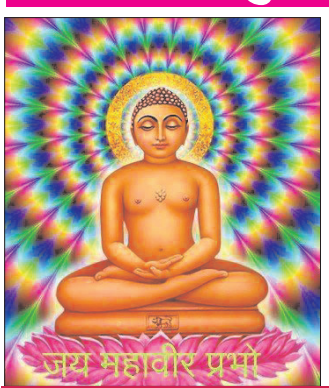

सुरेश कुमार-ललिता देवी बाकलीवाल, अमित कुमार- स्नेहा देवी बाकलीवाल, कैयरा, जेस्वी, शारव बाकलीवाल

सुरेश कुमार जैन एण्ड कंपनी

तरूण राम फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी-781001

जैन गजट द्वारा चर्याशिरोमणी आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी विशेषांक का प्रकाशन

पूज्य मुनि श्री सुप्रभ सागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक जैन गजट का समाधिस्थ पूज्य आचार्यश्री विराग सागर जी महाराज संघ के नये पट्टाचार्य चर्या शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज विशेषांक का प्रकाशन सुमति धाम, गोधा एस्टेट इन्दौर मध्य प्रदेश में 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक होने जा रहे पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित होने जा रहा है जिसका विमोचन इन्दौर में होने जा रहे पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर किया जायेगा। इस महोत्सव से पूरे देश भर से समस्त परम्पराओं के महान संतों के बड़ी संख्या में पधारने की संभावना है। यह विशेषांक सौभाग्यशाली पुण्यार्जकों के सहयोग से होगा जिसकी एक पृष्ठ की पुण्यार्जक सहयोग राशि आमंत्रित शुल्क 20,000/- के स्थान पर मात्र 10,000/- रूपये है। जिसमें आपका फोटो एवं नाम, पता चर्या शिरोमणी आचार्यश्री संबंधी लेख वाले पृष्ठ के नीचे सौजन्य के रूप में प्रकाशित किया जायेगा जिसके लिये आपका सहयोग सादर आमंत्रित है।

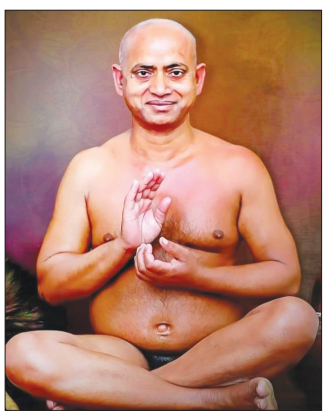

यह सहयोग राशि मात्र इसी विशेषांक के लिये निर्धारित की गई है।

इस विशेषांक में जैन गजट की पूर्व निर्धारित विज्ञापन दरों यथा फुल पेज 20,000/-, आधा पेज 12000/, चौथाई 6000/-, के एवं छोटे विज्ञापन 2100/-, 1500/- के विज्ञापन भी सादर आंमत्रित हैं।

समाज के श्रेष्ठी दानवीर महानुभावों से निवेदन है कि इसके लिये पुण्यार्जन राशि, सहयोग राशि एवं विज्ञापन भेजकर सहयोग प्रदान करें।

परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं से निवेदन है कि इसके लिए अपने संस्मरण, लेख, कवितायें एवं आचार्य श्री एवं संघ से संबंधित फोटो आदि निम्नलिखित वाट्सएप नं. या ईमेल पर या कोरियर से भेजकर सहयोग प्रदान करें। सम्पर्क -जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ- 226004 उ. प्र. 9415108233, 9415008344, 7505102419, 7607921391

तृतीय पट्टाधीश आचार्य श्री धर्म सागर जी का 112 वां वर्ष वर्धन वर्ष मनाया

राजेश पंचोलिया, इंदौर

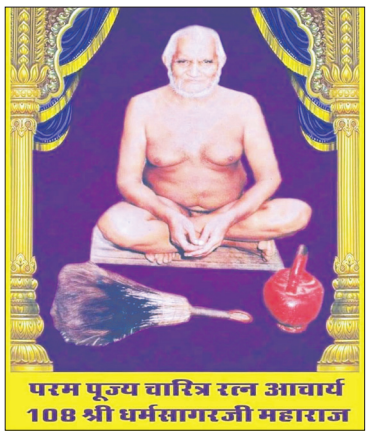

पारसोला। पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी संघ सहित पारसोला में विराजित है। आचार्य श्री के दीक्षा गुरु आचार्य तृतीय पट्टाचार्य आचार्य श्री धर्म सागर जी के 112 वें वर्ष वर्धन जन्म अवतरण वर्ष पर जयंतीलाल कोठारी दिगंबर जैन समाज पारसोला एवं ऋषभ पचौरी वर्षायोग समिति ने बताया कि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के सानिध्य में मंडल विधान कर आचार्य संघ के भक्तों, श्रावक श्राविकाओं द्वारा आचार्य श्री की भक्तिमय पूजन की गई। आचार्य श्री ने वर्धमान सागर दीक्षा गुरु आचार्य श्री धर्म सागर जी का गुणानुवाद कर बताया कि गुरु के हम पर बहुत कृपा है, गुरु आचार्य श्री धर्म सागर जी ने मुनि दीक्षा हमें दी।

आपका जन्म गंभीरा राजस्थान में सन् 1914 में हुआ। किशोर अवस्था में ही आपके और चचेरी बहन के माता-पिता का निधन होने से आपकी बड़ी बहन दाखा बाई ने आपका लालन पोषण किया। आप जीवन यापन करने के लिए इंदौर मध्य प्रदेश में आए, यहां पर कपड़ा मिल में पहले नौकरी की कपड़े निर्माण में होने वाली हिंसा को देखकर अपने वह नौकरी छोड़ दी। गृहस्थ अवस्था में भी आप निस्पृह रहे। कपड़े की गठरी लेकर आप विक्रय करते थे। रू 1 का मुनाफा होने पर आप बिक्री बंद कर वापस घर आ जाते थे। आपने आचार्य श्री वीर सागर जी से मुनि दीक्षा सन 1952 में ली। 24 फरवरी सन 1969 में जिस दिन आपको आचार्य पद की प्राप्ति हुई उसी दिन 11 भव्य प्राणियों को दीक्षा दी जिसमें हमारी भी 19 वर्ष की उम्र में मुनि दीक्षा हुई, हम पर दीक्षा गुरुदेव का काफी उपकार है। ब्रह्मचारी गज्जु भैया एवं राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि आचार्य श्री धर्मसागर जी का जन्म भगवान धर्मनाथ जी के ज्ञान कल्याणक दिवस हुआ तथा आपकी समाधि भी भगवान मुनिसुव्रतनाथ के ज्ञान कल्याणक दिवस पर हुई। सभी गुरुओं के आशीर्वाद से हम आचार्य श्री शांति सागर जी की परंपरा को चला रहे हैं। आचार्य श्री ने महत्वपूर्ण सूत्र में बताया कि जन्म को सार्थक कर, मरण को दीक्षा रुपी लक्ष्मी से वरण करने का कार्य सौभाग्यशाली जीव कर जीवन को सार्थक करते हैं। मुनि श्री हितेंद्र सागर जी एवं शिष्या आर्यिका श्री शुभमति माताजी ने आचार्य श्री धर्म सागर जी का गुणानुवाद किया। इसके पूर्व आचार्य श्री धर्म सागर जी महाराज की पूजन संगीतमय आचार्य संघ ने संपन्न कराई।

'जैन शिशु एवं बाल संस्कार' अनूठा एवं अद्भुत दिव्य आशीष कार्यक्रम पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ सान्निध्य एवं कर कमलों से दिनांक 14.01.2025, मंगलवार को दोपहर 12.15 बजे से सन्मति भवन में जैन शिशु एवं बाल संस्कार का अनूठा एवं अद्भुत कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आज दो धाराओं का अति भव्य मंगल मिलन हुआ

राजेश जैन दद्दू

सागर। विशुद्धरत्न श्री सुप्रभ सागर जी महाराज ससंघ का सागर मोराजी में विराजमान जगत पूज्य निर्यापक मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज एवं आचार्य रत्न पट्टाचार्य चर्याशिरोमणी विशुद्धसागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री सुप्रभसागर संसघ से बहुत ही वात्सल्य भव्य महामिलन हुआ। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि यह मिलन देखकर समाज जन भावविभोर हो गये और जयकारे नमोस्तु शासन जयवंत हो से मंदिर परिसर गुंजायमान कर दिया।

राजेश जैन दद्दू ने बताया कि मुनि श्री सुप्रभ सागर ने अपने उद्बोधन के माध्यम से जगत पूज्य के प्रति अपनी भक्ति के पुष्प अर्पित किये साथ ही अप्रैल माह में इंदौर में होने वाले आचार्य विशुद्ध सागर जी के पट्टाचार्य महामहोत्सव मे ससंघ सम्मिलित होने का आमंत्रण भी दिया।

राष्ट्रीय जिन शासन एकता संघ की इंदौर संभाग की बैठक

इंदौर। राष्ट्रीय जिन शासन एकता संघ की इंदौर संभाग की बैठक समवशरण मंदिर में मुनिश्री प्रमाण सागर जी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुई। मुनि श्री ने समाज को एकरूपता में पिरोने का आशीर्वाद देते हुए समाज से स्वयं आगे आकर समाज के लिए सेवा देने के लिए संघ से स्व प्रेरणा से जुड़ने का आव्हान किया। मुनि श्री ने निरन्तर और सतत् समाज उत्थान के लिए लगे रहने की प्रेरणा देते हुए कहा कि हम सभी की जिम्मेदारी है कि भविष्य में जिनशासन अभिछिन्न एवं सुरक्षित रहे।

सांसद नवीन जैन के साथ प्रतिनिधि मंडल ने गृहमंत्री को दिया आमंत्रण

01 से 06 फरवरी को डोंगरगढ़ में होगा अनुष्ठान

पुनीत जैन

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की महाप्रयाण समाधि को एक वर्ष पूर्ण होने के पावन अवसर पर आयोजित होने जा रहे धार्मिक अनुष्ठान में भारत सरकार के गृह मंत्री अमित शाह को आमंत्रित किया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रातः स्मरणीय, समाधि सम्राट परम पूज्य संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की पावन समाधिस्थली श्री चंद्रगिरी महातीर्थ, डोंगरगढ़ (छ.ग.) में पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण समाधि के एक वर्ष पूर्ण होने के पावन प्रसंग पर आगामी दिनांक 1 फरवरी से 6 फरवरी 2025 तक भव्य धार्मिक अनुष्ठान सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होने जा रहा है।

राज्यसभा सांसद नवीन जी जैन (पीएनसी) आगरा के नेतृत्व में 'विद्यायतन' समाधि स्मारक, चंद्रगिरी ट्रस्ट एवं सर्वोपयोगी ट्रस्ट के प्रतिनिधि मंडल द्वारा भारत सरकार के गृह मंत्री माननीय अमित शाह को आमंत्रण पत्र भेंट कर कार्यक्रम में सम्मिलित होने बाबत निवेदन किया। प्रतिनिधि मंडल में सम्मिलित सांसद नवीन जैन, प्रभात जैन मुम्बई, विनोद बड़जात्या रायपुर, सुधीर जैन कागजी दिल्ली एवं मनीष जी जैन रायपुर ने माननीय गृह मंत्री जी से मुलाकात कर समाधि दिवस के अवसर पर होने वाले कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। गृहमंत्री अमित शाह जी ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रतिनिधि मंडल को सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने बताया कि वे 1 से 6 फरवरी के बीच डोंगरगढ़ में आयोजित होने वाले धार्मिक अनुष्ठान में अवश्य शामिल होंगे।

राजस्थान के महामहिम राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से जयपुर शहर जैन के बन्धुओं ने की मुलाकात

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 16 जनवरी। विश्व प्रसिद्ध श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्ति धाम जहाजपुर पधारने एवं जैन धर्म के प्रवर्तक एवं प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के जन्म कल्याणक दिवस (जन्म जयंती) पर अवकाश की मांग को लेकर जैन बन्धुओं ने गुरुवार 16 जनवरी को राजभवन में माननीय राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से मुलाकात की।

कार्यक्रम में राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि जैन धर्म के प्रवर्तक एवं प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव (आदिनाथ) के जन्म कल्याणक दिवस (जन्म जयंती) पर आगामी 23 मार्च को अवकाश घोषित करने की मांग को लेकर जैन बन्धुओं ने राजभवन में गुरुवार, 16 जनवरी को राजस्थान के राज्यपाल माननीय हरिभाऊ बागड़े से मुलाकात की।

इस मौके पर शिष्ट मंडल ने माननीय राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े को भगवान ऋषभदेव के बारे में विस्तार से जानकारी दी। भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत रखने के बारे में भी माननीय राज्यपाल महोदय को बताया गया। माननीय राज्यपाल ने जैन समाज की इस मांग पर कार्यवाही के लिए राज्य सरकार को लिखने के लिए आश्वस्त किया, शिष्ट मंडल ने विश्व प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र श्री मुनिसुव्रत नाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्तिधाम जहाजपुर के दर्शनार्थ पधारने एवं आगामी 7-8-9 फरवरी 2025 को स्वस्तिधाम में गणिनी आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माता जी ससंघ के सानिध्य में स्वस्ति धाम में आयोजित होने वाले पंचम वार्षिकोत्सव एवं सहस्त्राभिषेक महोत्सव तथा श्री शांतिनाथ जिनालय व त्यागी व्रतियों की आहार शाला के शिलान्यास के शुभावसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया। जिस पर माननीय राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने अपनी सहर्ष मौखिक स्वीकृति प्रदान की, इससे पूर्व जैन बन्धुओं ने समाज की ओर से माननीय राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े का माला एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत एवं सम्मान किया। इस मौके पर राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा, सांगानेर सम्भाग अध्यक्ष चेतन जैन निमोडिया सहित श्री धर्म जागृति संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष श्री पदम चन्द बिलाला एवं श्री मुनि संघ सेवा समिति अजमेर के अध्यक्ष श्री सुशील बाकलीवाल शामिल हुए।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरी बेटी की उम्र 31 वर्ष हो चुकी है। मगर काफी प्रयास करने के बाद भी सफलता नहीं मिल रही - मनोज जैन, सूरत

उत्तर - बेटी की कुंडली में चल रही शनि और राहु की दशा देरी का मुख्य कारण है। शनि और राहु का जाप्य अनुष्ठान करायें, लाभ होगा।

प्रश्न 2. गुरूजी चरण स्पर्श, मैं अपने 18 साल के बेटे से बहुत परेशान हूं, किसी की भी नहीं सुनता, क्रोध बहुत करता है - विपिन जैन, सहारनपुर

उत्तर - विपिन जी, बेटे की कुंडली में सात साल की केतु की महादशा चल रही है। लहसुनिया रत्न मंगलवार को चांदी में धारण करायें, फर्क पड़ेगा।

प्रश्न 3. मैंने एक मार्केट बनाई थी, मगर एक भी दुकान नहीं बिकी क्या कारण है - करूण जैन, दिल्ली

उत्तर - आप मार्केट के वृहम स्थान में 3 इंच चौकोर पीतल का टुकड़ा दबा दें रविवार को, लाभ होगा।

प्रश्न 4. गुरूजी जय जिनेन्द्र, क्या मेरी कुंडली में कोई ग्रह उच्च का बैठा हुआ है? और उच्च का ग्रह कैसा फल देता है? - अमन पालीवाल, भोपाल (म.प्र.)

उत्तर - अमन जी, आपकी कुंडली में गुरू ग्रह 4 न. के खाने में उच्च का बैठा हुआ है और उच्च का ग्रह अच्छा फल देता है।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

"आर्ष परम्परा में पूजन विधान" विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया

दिल्ली। अखिल भारतीय जैन ज्योतिष आचार्य परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं बलबीर नगर मंदिर कमेटी के साधु सेवा समिति के अध्यक्ष श्री रवि जैन गुरुजी एवं पंडित रत्न श्री दीपक जी शास्त्री के संयोजन में आयोजित गोष्ठी में दिल्ली एन सी आर से पधारे अनेक विद्वानों ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विद्वानों ने कहा कि आर्ष परम्परा के अनुसार पूजन पद्धति भगवान महावीर के समय से चलती आ रही है, आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने भी इसका उल्लेख चैत्य भक्ति में किया है, समयानुसार इसका लोप कुछ समय के किए हो गया था, 13 वीं शताब्दी में भट्टारक परम्परा में पूजन पद्धति का पुनः प्रादुर्भाव हुआ, उन्होंने बताया कि देशकाल के प्रभाव से पूजन पद्धति में भिन्नता भी पायी जाती है। इन विषयों पर ध्यान न देकर पूजन पद्धति की मूल परम्परा को अपनाना चाहिए, और परस्पर किसी प्रकार का विरोध नहीं रखना चाहिए। मुनि श्री अनुमान सागर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन धर्म का प्राण अहिंसा है और हमें अहिंसा धर्म का पालन करते हुए पूजन पद्धति अपनानी चाहिए।

संगोष्ठी में श्रीमान जयकुमार जैन उपाध्ये, प्रो. डॉ. टीकम चन्द जैन, डॉ. अरविंद जैन, पं. अशोक जैन गोयल, पं. अशोक जैन धीरज, पं. अजित जैन चेतन, पं. मुकेश जैन गुरुग्राम, पंडित सोनल जैन शास्त्री दिल्ली, पं. ऋषभ जैन दरियागंज, पं. प्रदीप जैन, प. नीरज जैन, पं. प्रदीप जैन, प. शैलेन्द्र जैन, पं. अखिलेश जैन, पं. संजय जैन पावला, पं. रुपेश जैन, पं. महावीर प्रसाद जैन, पं. सुशील जैन, पं. संजय जैन, पं. सतीश जैन शास्त्री, पं. विमल जैन, पं. मदन जैन, पं. दीपक जैन, पं. रोहित जैन, पं. चक्रेश जैन, पं. नेमीचंद जैन, पं. जिनेन्द्र जैन अकेला, पं. जय कुमार जैन उपाध्ये, पं. संदीप जैन, पं. आदर्श जैन, डॉ. सुमेर चन्द जैन, श्री देवेन्द्र कुमार जैन ने भाग लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन पंडित रत्न श्री दीपक शास्त्री एवं डॉ. अरविन्द जैन शास्त्री ने संयुक्त रूप से किया।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड,
ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा,
5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर
कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

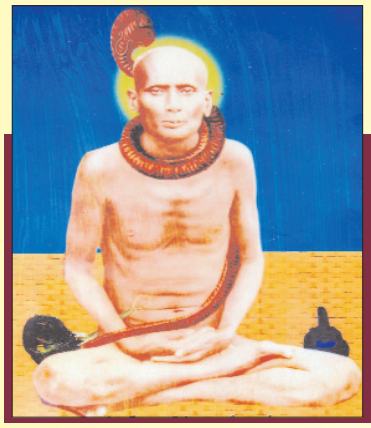

प्रथमाचार्य शांतिसागर व्रत

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव (2024-25) के उपलक्ष्य में परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज द्वारा सम्पूर्ण जैन समाज को संयम की प्रेरणा हेतु प्रदान किया गया एक व्रत का संकल्प

आचार्य पद प्रतिष्ठापन
शताब्दी महोत्सव
13 अक्टूबर 2024 -
3 अक्टूबर 2025

36 एकासन का नियम

प्रति माह कम से कम एक या अधिकतम तीन

जाप्यः ऊँ ह्रूँ प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर नमः।

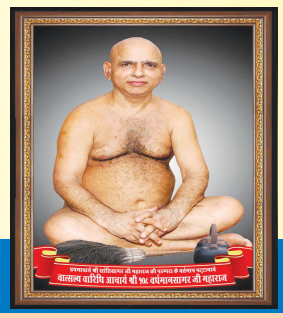

पूजनः प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजा

प्रेरणा

सोहनलाल कासलीवाल
अध्यक्ष खण्डेलवाल दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

रिखबचन्द पाटोदी
अध्यक्ष दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

सोहनलाल पहाड़िया
पूर्व अध्यक्ष दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

जितना जिनका प्रत्येक कार्य अदभुत् आकर्षण व महान व्यक्तित्व है, जिनका नाम स्मरण करते ही हृदय भक्ति से भर जाता है, उन आचार्य श्री की गौरव गाथा तो उनकी मुखाकृति पर ही अंकित थी। लिखने की चीज भी नहीं यह तो मनन व अध्ययन की चीज है। काश उन्हें हम ठीक-ठीक समझ पाते।

सर्पराज का उपसर्ग जिनकी तपस्या में खलल न डाल सका, असंख्य चीटियों का घंटों काटना, जिनके लिये मानसिक अशान्ति का कारण न बन सका, सिंहनिष्क्रीड़ित व्रत के लम्बे उपवास के समय ज्वर का प्रकोप जिनको शिथिलाचार की ओर ठेल न सका, कंचन और कामिनी जैसे मोहक पदार्थ जिनके संयम साधना में बाधक न बन सके उन योगिराज की आत्मा कितनी महान थी, यह सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है।

- शेखरचंद पाटनी

पुण्यार्जक/नमनकर्ता

सोहनलाल बिदीत कुमार कासलीवाल, पाण्डिचेरी	रिखबचन्द पाटोदी, पाण्डिचेरी	सोहनलाल पहाड़िया, पाण्डिचेरी
धर्मचन्द शकुन्तला जैन व्रती श्रावक, पाण्डिचेरी	मनीष मार्बल, पाण्डिचेरी, मदुरई, किशनगढ़	गजराज भरत सुशील कोठारी पाण्डिचेरी

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 kpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।